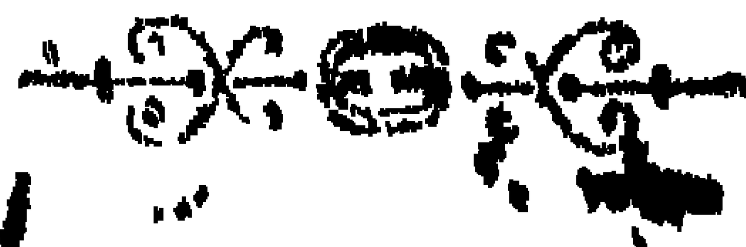
चतुर्वेदी-उपहार-ग्रन्थावली सं० ३

तुलसीहितोपदेश।

संग्रहकर्ता

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा।



Printed by M. L. Bhargava, B. A.,

AT THE

NEWUL KISHORE PRESS,

LUCKNOW.

1916.

1st Edition. *Price, As. 12.*

PREFATORY NOTE.

"Not marble nor the gilded monuments of princes shall outlive this powerful rhyme."

The Ramayan of Tulsidas has received universal acclamation. There is no name in the world of Hindi literature like the name of the Ramayan of Tulsidas. It is at once a book of phylosophy, of religion, of history, of literature, of moral precepts and what not. In short it is a manual and a hand-book for a good citizen. The endless multiplication of edition of this book is the natural consequence of the effect it produces and the benefits it confers.

The present volume is the outcome of an idea, that struck me while making selections from the book for "Tulsi Sangrah", to collect all the moral precepts and sayings *so profuse* in the book and so essential in human life. I marked the precepts and sayings as I read the book and the same are put herein with English translation taken from Mr. Growse Book.

I should like to thank Lala Sita Rama, B.A., retired Deputy Collector, for valuable advice in the initial stages of the book.

DARAGANJ :
Allahabad, 18th July 1915.

C. D. P. SHARMA.

इति ।

श्रीः



तुलसीहितोपदेश।

मंगलाचरण।



जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करिवरवदन। गणेशजी।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभगुणसदन॥

जिनके स्मरणमात्र ही से कार्य सिद्ध हो जाते हैं, वे गजराज के समान मुख वाले, बुद्धि की खानि, सर्वगुण-सम्पन्न गणेशजी कृपा करें।

मूक होयँ वाचाल, पंगु चढ़हिं गिरिवर गहन। भगवान्
जासु कृपा सुदयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन॥ विष्णु।
नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन।
करहु सो मम उरधाम, सदा क्षीरसागर शयन॥

जिनकी कृपा से गूँगे भी चतुर वक्ता हो जाते हैं, पंगुल दुर्गम पर्वतों पर चढ़ जाते हैं वे कलि के पाप नष्ट करने वाले दयालु भगवान् मेरें ऊपर कृपा करें।

नीले कमल के समान रंग वाले, नये लाल कमल के समान नेत्र वाले, क्षीरसागर में शयन करने वाले मेरे हृदय में निवास करो।

[गूँगे चार तरह के होते हैं—वचनमूक, ज्ञानमूक, धर्ममूक और अज्ञानमूक। पंगु तीन तरह के होते हैं—पदपंगु, कर्मपंगु और सुमतिपंगु।]

A prayer to Vishnu.

2. Thou, too, by whose favours the dumb becomes eloquent, and the lame can climb the vastest mountain, be favourable to me, O thou that consumest as fire all the impurities of this iron age. Take up thy abode also in my heart, ? O thou that slumberest on the milky ocean, with body dark as the lotus, and eyes bright as a budding water lily.

महादेव जी।

कुन्द इन्दु सम देह, उमारमण करुणाअयन।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दनमयन॥

जिनका शरीर कुन्द के फूल के समान सफ़ेद और चन्द्रमा के समान कान्तिमान् है, जो पार्वती के पति हैं, जो दीनों पर स्नेह रखते हैं और जिन्होंने कामदेव को भस्म कर डाला वे महादेवजी मुझ पर कृपा करें।

A prayer to Siva.

6. O spouse of Uma, clear of hue as the Jasmine or the moon, home of compassion, who showest pity to the humble, show pity upon me, O destroyer of Kamdeva.

गोस्वामी जी की नम्रता।

कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊँ। मति अनुरूप राम गुण गाऊँ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहौ तूल केहि लेखे माहीं॥

न तो मैं कवि ही हूँ और न (लोग) मुझे बुद्धिमान् ही कहते हैं, मैं केवल अपनी बुद्धि के अनुसार भगवान् की कीर्ति गाता हूँ। जिस प्रकार पर्वतों को उखाड़ देने वाली (शक्तिशाली) आँधी के आगे, रुई कोई वस्तु नहीं है, उसी प्रकार भगवान् के (विशुद्ध) अपार चरित्र के (वर्णन के) लिये मेरी संसारी बुद्धि सर्वथा अयोग्य है। अर्थात् जब बड़े बड़े ऋषि मुनि ही उनका गुण न गा सके तब मैं कैसे गा सकता हूँ।

Though I am no poet, and have no pretensions to cleverness, I sing as best as I can the virtues of Rama. How unfathomable his actions, how shallow my poor world-entangled intellect. The courtesy of the poet.

वन्दौं प्रथम महीसुर चरणा। मोहजनित संशय सब हरणा॥ ब्राह्मण वन्दना।

पहिले मैं ब्राह्मणों के चरणों की वन्दना करता हूँ क्योंकि वे पृथिवी पर निवास करने वाले देवता हैं, वे मोह से पैदा हुई सब शङ्काओं का समाधान कर देते हैं।

First I reverence the feet of the great Brahman saints, potent to remove the doubts engendered by error. The Brahmans.

गुरु विवेक सागर जग जाना। गुरु।

संसार जानता है कि गुरु ज्ञान के समुद्र हैं।

The *guru*, as all the world knows, is an ocean of wisdom. The spiritual preceptor.

वन्दौं गुरु-पद-कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि। गुरुवन्दना
महामोह तम-पुंज, जासु वचन रविकर निकर॥

मैं अपने गुरु (नरहरि स्वामी) के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ जिनके वचन सूर्य की किरणों के समान मेरे अज्ञानरूपी अंधेरे को नष्ट कर देते हैं ।

A prayer to the teacher. I reverence the lotus feet of my master, that ocean of benevolence, Hari incarnate, whose words are like a flood of sun light on the darkness of ignorance and infatuation.

गुरुप्रभाव। वन्दौं गुरु-पद-पद्म-परागा । सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥
अमियमूरिमय जीवनचारू । शमन सकल भवरुज परिवारू ॥
सुकृत शम्भु तनु विमल-विभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जनमन मंजु मुकुर मलहरणी । कियेतिलक गुणगणवशकरणी ॥
श्रीगुरु पद नख मणि गण ज्योती । सुमिरतदिव्यदृष्टि हियहोती ॥
दलन मोह तम सोसु प्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहि जासू ॥
उघरहिं विमल विलोचन हीके । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥
सूझहिं रामचरितमणिमाणिक । गुप्तप्रकटजहँजो जेहिखानिक ॥
गुरुपदरज मृदु मंजुल अंजन । नयनअमिय दृग दोष विभंजन ॥

मैं अपने गुरु के चरणकमल के रज की वन्दना करता हूँ । वह अमरमूरि की तरह संजीवनी है और संसार के रोगों (बन्धनों) से छुड़ाने के लिये सर्वोत्कृष्ट औषधि है । वह शिवजी के अङ्ग की विभूति के समान पवित्र है तथा मङ्गलकारिणी एवम् आनन्ददायिनी है । यह रज हृदयरूपी दर्पण को साफ कर देती है, और इसका तिलक लगाने से सारे गुण वश में हो जाते हैं । गुरु के चरणों के नखों की ज्योति मणियों की आभा के समान है, उसके स्मरणमात्र ही से रहस्यों के जानने की शक्ति आ जाती है । उसका

प्रकाश मोहरूपी अन्धकार को भगा देता है और यह प्रकाश बड़े ही सौभाग्य से प्राप्त होता है, इसके प्राप्त होते ही ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं और संसाररूपी रात्रि के दुःख मिट जाते हैं, चाहे वे चरित्र गुप्त हों या प्रकट । गुरु की पदरज शीतल सुर्मा है, जो नेत्रों के लिये अमृत के तुल्य है और उनके सारे दोष नष्ट कर देता है ।

The religious preceptor and the blessings of his teachings.

I reverence the pollen-like dust of the lotus feet of my master, bright, fragrant, sweet and delicious; pure extract of the root of ambrosia, potent to disperse all the attendant ills of life; like the holy ashes on the divine body of Shambhu, beautiful, auspicious, ecstatic.

Applied to the fore-head as a *tilak*, it cleanses from defilement the fair mirror of human mind and gives it the mastery of all good. By recalling the lustre of the nails of the reverend *guru's* feet, a devine splendour illumines the soul, dispersing the shades of error with its sun-like glory. How blessed he who takes it to his heart! The mental vision brightens and expands, the night of the world with sin and pain fades away, the actions of Rama like the diamonds and rubies, whether obvious or obscure, all alike become clear, in whichever direction the mine is explered. The dust of the *guru's* feet is a soft and charming collyrium like ambrosia for the eyes, to remove every defect of vision.

गुरुभक्त । जे गुरु पद अम्बुज अनुरागी । ते लोकहु वेदहु बड़भागी ॥

जो गुरु के चरणकमलों के भक्त हैं, उन्हें वेद और लोक दोनों ही भाग्यशाली बतलाते हैं ।

Devoted disciple. All who love the lotus feet of their *guru* are highly blessed, so say both the world and the Vedas.

गुरु वचन पर अविश्वास । गुरु के वचन प्रतीति न जेही । स्वप्नेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥

जिसे अपने गुरु के वचनों पर विश्वास नहीं है उसको स्वप्न में भी सुख और सिद्धि नहीं मिल सकती ।

To doubt the words of the Guru. He, who does not put confidence in the words of his *guru*, cannot even dream of prosperity and success.

गुरु से ईर्ष्याकरने वाले । जो शठ गुरु सन ईर्ष्या करहीं । रौरव नरक कल्प शत परहीं ॥

जो मूर्ख गुरु से डाह करते हैं वे बहुत दिनों तक भयंकर नरक वास करते हैं ।

The fools who envy their guru. The fools who envy their *guru*, are made to remain in the abyss of hell for a long time.

गुरु से छिपाव न करना चाहिये । सन्त कहहिं अस नीति प्रभु, श्रुति पुराण जो गाव ।
होय न विमल विवेक उर, गुरु सन किये दुराव ॥

साधु यह कहा करते हैं और यह शास्त्रों से प्रतिपादित भी है कि जो मनुष्य गुरु से छिपाव करता है उसके हृदय में निर्मल विवेक उत्पन्न नहीं हो सकता ।

Nothing should be concealed from Guru. This sir, is a maxim of all the saints and is also declared by the Vedas and Puranas that there is no sound wisdom in his breast who conceals aught from his spritual master.

रामनाम माहात्म्य।

राम-नाम-मणि-दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहत उजियार॥

यदि तुम्हारी इच्छा है कि तुम्हारे हृदय (मन्दिर) में तथा तुम्हारे आस पास (बाहर) भी (ज्ञान की) ज्योति हो जाय तो अपनी जिह्वारूपी देहरी पर कभी न बुतने वाला रामनामरूपी दीपक (मणि) धरो। तात्पर्य यह है कि यदि सच्चा ज्ञान सम्पादन करना है तो राम नाम रटा करो।

The virtue of the name of Rama.

Place the name of Rama as a jewelled lamp at the door of your lips and there will be light, both inside and out.

रामायण माहात्म्य।

राम चरित मानस यह नामा। सुनत श्रवण पाइय विश्रामा॥
मनकरि विषय अनल वन जरहीं। होहिं सुखी जो इहि सर परहीं॥

इसका नाम रामचरितमानस है। इसके सुनते ही आत्मा को शान्ति मिलती है। मनरूपी हाथी विषय वासना रूपी वन की अग्नि में पड़ कर यदि जल रहा हो तो इस सरोवर में स्नान करने से अवश्य ही वह शीतल हो जायगा।

यद्यपि यह कथन कवि के द्वारा कहा गया है, तथापि इसकी सत्यता में तनिक भी सन्देह नहीं है। असंख्य प्राणियों ने सांसारिक दुःखों से संतप्त हो कर, इस पुस्तक द्वारा अपने आत्मा को शीतल और संतुष्ट किया है।

The Ramayana.

The name of this book is Ramayan—the lake of Rama's deeds.

The mere hearing of Rama's acts serves to refresh the ear, while the soul like an elephant

escaping from a forest on fire with lust plunges into it and gains relief.

रामचन्द्र जी । राम प्राणप्रिय जीवन जीके । स्वारथरहित सखा सबहीके ॥

रामचन्द्र जी तो प्राणों के समान प्यारे, हमारे प्राणों के भी प्राण हैं और सभी के निःस्वार्थी मित्र हैं ।

Rama. Ram is dearer than life, is the soul of our soul and the disinterested friend of all.

रामगुण । उमा ! राम गुण गूढ़, पण्डित मुनि पावहिं विरति ।
पावहिं मोह विमूढ़, जे हरिविमुख न धर्मरत ॥

हे पार्वती ! रामचन्द्रजी के गुण बड़े गम्भीर हैं, उनके अध्ययन से विद्वान् और तपस्वी वैराग्य पाते हैं । किन्तु जो लोग मूर्ख हैं, जो भगवान् के भक्त नहीं हैं, जो धार्मिक नहीं हैं, वे मोह में फँस जाते हैं ।

The results of being his devotee and his enemy. O Uma! the saints, who are learned in Rama's mysterious qualities, enjoy peace of mind: but fools, who are Hari's enemies and have no love of religion, reap only delusion.

राम नाम का प्रभाव। कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई । राम सकैं न नाम गुण गाई ॥
राम नाम को कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ।
जो सुमिरत भये भाग्यतें, तुलसी तुलसीदास ॥

मैं राम नाम की महिमा कहाँ तक गाऊँ, स्वयं रामचन्द्र भी तो अपने नाम की महिमा नहीं गा सकते ।

राम नाम इस कलियुग में ऐसा कल्पवृक्ष है जिससे सब मनोकामना पूरी हो सकती है । इसके रटने से

सौभाग्य वश मैं (जो पहिले अज्ञानी) तुलसी समझा जाता था अब (महात्मा) तुलसीदास हो गया हूँ।

Who can sing the virtues of the name of Rama not even the incarnate Rama could exhaust them. The virtues of the name of Rama.

The name of Rama is as the tree of paradise, the centre of all that is good, in this wicked world, and whoever meditates upon it becomes (Says Tulsi Das) transformed as it were from a vile hemp-stick into a sweet-smelling tulsi plant.

मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की। रामकथा।
गति क्रूर कविता सरित की ज्यों परम पावन पाथ की॥
प्रभुसुयश संगति भणित भलि होइहि सुजनमनभावनी।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावन पावनी॥

तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी की कथा मंगल करने वाली और कलियुग के मल (पाप) का नाश करने वाली है। जिस प्रकार गंगा जी की धारा टेढ़ी हो कर बहती है उसी प्रकार (मेरी) कविता की वर्णनशैली भी टेढ़ी है किन्तु वह (श्रीरामचन्द्र की कथा होने के कारण गंगाजी के समान ही) पवित्र है। जिस प्रकार श्मशान की अपवित्र राख शिवजी के शरीर से लगते ही पवित्र हो जाती है उसी प्रकार भगवान् श्री रामचन्द्रजी के यश से मिली होने के कारण मेरी कविता भी सज्जनों को पसन्द आवेगी।

Though rapturous lays befit his praise, who cleansed a world accurst, The praise of Rama.

Yet Tulsi's revulet of rhyme may slake a traveller's thirst.

How pure and blest on Siva's breast show the vile stains of earth!

So my poor song flows bright and strong illumed by Rama's worth.

रामचरित्र। रामचरित जे सुनत अघाहीं। रसविशेष जाना तिन नाहीं॥

जो लोग भगवान् की कथा सुन कर तृप्त हो जाते हैं वे भगवान् की कथा के पूरे रसिक नहीं हैं क्योंकि भगवान् की कथा ऐसी सुस्वादु है कि मनुष्य उससे कभी तृप्त नहीं हो सकता।

The deeds of Rama. They who can be satiated with hearing Rama's deeds do not relish their peculiar savour.

रामकृपा। सकल विघ्न नहिं व्यापहिं तेही। राम कृपा करि चितवहिं जेही॥

जिस पर भगवान् की कृपा होती है उस पर किसी विपत्ति का असर नहीं पड़ता।

The grace of God. But no difficulties deter those whom Rama regards with affection.

राम का गुण गान। सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुण गान।
सादर सुनहिं जे तरहिं भव, सिंधु विना जलयान॥

भगवान् का गुण मंगल करने वाला है। जो लोग उसे आदरपूर्वक सुनते हैं वे विना सहारे (नाव) ही के इस संसाररूपी समुद्र के पार हो जाते हैं।

To sing the praise of Rama. The virtues of Raghunayak are the source of every blessing, and those who reverently hear

their ricital cross the ocean of existence without any need for a boat.

रामहिं केवल प्रेम पियारा । जान लेहु जो जाननहारा ॥ राम और भक्ति ।

भगवान् केवल भक्ति के भूखे हैं, जो समझदार हों वे इस तत्त्व को समझ लें ।

It is only love that Rama loves; understand this, ye who are men of understanding. Rama and love.

हरि-हर-पद रति मति न कुतरकी । तिनको मधुर कथा रघुवर की ॥ रामकथा के प्रेमी ।

जिनको विष्णु और शिव से प्रेम है तथा जिनकी बुद्धि निर्मल है उनको राम की कथा बहुत प्यारी है ।

[श्रवण सुखद भव भय हरण, त्यागिन के अत्याग ।
नष्ट जीव बिनु कौन हरि, गुण सो करै विराग ॥]

To the true and orthodox worshippers of Hari and Har, the story of Raghubar will be sweet as honey. The men who like to hear his deeds.

जड़ चेतन जग जीव युत, सकल राममय जानि ।
आकर चार लाख चौरासी । जात जीव नभ जल थल वासी ।
सिया राम मय सब जग जानी । करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी ॥ राममय संसार है ।

मेरा विश्वास है कि क्या अचेतन पदार्थों में और क्या चेतन पदार्थों में—सभी में भगवान् व्याप रहे हैं और जो चार प्रकार की खानों (स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज और पिण्डज) में बँटे हैं, जो जीव कर्मानुसार (उनमें अर्थात्) आकाश में, जल में, या पृथिवी में रहते हैं, उन सब में, सारे जग में सीताजी और श्रीरामचन्द्रजी को व्यापक समझ मैं सब को प्रणाम करता हूँ ।

The world is pervaded by the spirit of God.

Knowing that the whole universe, whether animate or inanimate, is pervaded by the spirit of Rama, and that by four modes of birth are produced 84 laks of species inhabiting the air, the water and the earth, with clasped hands I perform an act of adoration, recognizing the whole world as pervaded by the spirit of Sita and Rama.

N. B.—The four modes of birth are *pindaja* or viviparous *andaja* or oviparous, *swedaja* or born in sweat like lice, and *udbhija* produced like spouting like a tree.

रामचन्द्र जी की भक्तवत्सलता।

कहत नसाय होय अति नीकी। रीझत राम जान जन जीकी।
रहत न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरत सौ बार हिये की॥

चाहे भक्त की कही हुई बात बुरी हो या भली, भगवान् कथनशैली पर ध्यान नहीं देते। उनका लक्ष्य तो भाव पर रहता है। वे अपनी भक्तवत्सलता के कारण भक्त के दोषों को भुला देते हैं, किन्तु भक्त के हृदय की एक बार की भावना को वे बारम्बार याद करते हैं।

The Lord cares for the spirit and not for the individual weak points.

The lord is not mindful of a chance fault, but on every occasion he considers the heart.

राम विरोध।

अन्धकार बरु रविहिं नसावै। रामविमुख सुख जीव न पावै॥

चाहे अंधेरा सूर्य को नष्ट क्यों न कर दे, पर भगवान् का विरोधी सुख नहीं पा सकता है।

Sooner shall darkness extinguish the sun than any creature can find happiness if he has Rama against him. The enmity of Rama.

राम ब्रह्म परमारथ रूपा । अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
सकल विकार रहित गत भेदा । कहि नित नेति निरूपहिं वेदा॥ भगवान् के गुण ।

श्रीरामचन्द्रजी परब्रह्म और परममोक्षरूप हैं। इनकी गति जानी नहीं जा सकती, इन्हें लोग अनुभव से भी नहीं देख सकते, इनका न तो आदि है और न इनकी कोई उपमा है। इनमें संसार के विकार नहीं हैं अर्थात् इन्हें सुख दुःख नहीं व्यापता और ये भेद से परे हैं । वेदों ने यही निश्चय किया है कि इनका अन्त (इति) नहीं है ।

Rama is God, the totality of good, imperishable, invisible, uncreated, incomparable. void of all change, indivisible, whom the Veda declares that it cannot be defined. Qualities of God.

सुनु सुरेश रघुनाथ स्वभाऊ । निज अपराध रिसाहिं न काऊ॥
जो अपराध भक्त कर करई । राम रोष पावक सो जरई ॥ भगवान् का स्वभाव।

भगवान् का स्वभाव ऐसा है कि वे अपना अपराध करने वालों के दोष को भूल जाते हैं पर यदि कोई उनके भक्त का अपराध करे तो वे उसे कदापि नहीं क्षमा करते ।

Listen, O king it is Rama's nature never to be angry at any sin against himself, but whosever sins against one of his servants is consumed in the fire of his wrath. Nature of Rama.

गरल सुधा रिपु करै मिताई । गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥
गरुअ सुमेरु रेणु सम ताही । राम कृपा करि चितवहिं जाही॥ भगवान् की कृपा।

जिसको भगवान् कृपा की दृष्टि से देखते हैं उसको विष अमृत के तुल्य, शत्रु मित्र के समान, समुद्र गौ के खुर के समान छोटा, और महाभारी सुमेरु पर्वत धूरि की तरह हलका हो जाता है।

Grace of God.] Deadly poison becomes as ambrosia, foes turn friends, ocean shrinks to a mere puddle, fire gives out cold and huge summer is of no more account than grain of sand for him whom Rama deigns to regard with favour.

भगवान् के प्रिय। काम क्रोध मद मान न मोहा। लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा॥
जिनके कपट न दम्भ न माया। तिनके हृदय बसहु रघुराया॥

जिनके हृदय में काम, क्रोध, घमण्ड, अहंमन्यता या मोह नहीं हैं, जो लालची नहीं हैं, जो संताप, सुख और द्वेष के वशीभूत नहीं हैं, जिनके हृदय में कपट, पाखण्ड और माया नहीं हैं उनके हृदय में श्रीरामचन्द्रजी वास करैं।

Beloved of Rama. Whoso is unmoved by lust, anger, pride or arrogance, and is without covetousness excitement partiality or malice, without fraud, hypocrisy or heretical delusion, dwell in his heart Raghuraya.

भगवान् से प्रेम। सखा परम परमारथ एहू। मन क्रम वचन राम पद नेहू॥

मनुष्य की सब से बड़ी भलाई भगवान् के चरणों में मन, क्रम और वाणी से प्रेम करने में है।

Love of Rama. This is mans highest good, to be devoted to Rama in thought, word and deed.

राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसनहीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित वर नारी ॥
राम विमुख सम्पति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥

भगवान् के विना वस्तु ।

हे देवताओं के शत्रु, विचार कर और अहंकार तथा मोह को छोड़ कर देख कि राम नाम के विना वाणी उसी तरह अच्छी नहीं लगती जिस तरह गहने पहिने; किन्तु वस्त्रहीन स्त्री अच्छी नहीं लगती । भगवान् से विमुख रहने पर, ऐश्वर्य और विभव न होने ही के समान है । ऐसी अवस्था में विभव का मिलना और न मिलना बराबर है ।

Unless Rama's name be in it, no speech has any charm; think and see for yourself, apart from pride and vanity. Without her clothes, Ravan ! a beautiful woman, however richly adorned with jewels, is a shameful sight; and so is wealth and dominion, without Rama, gone at once, gotten as if not gotten at all.

Things devoid of his spirit.

उमा दारुयोषित की नाईं । सबहिं नचावहिं राम गुसाईं ॥

भगवान् सब को नचाते हैं।

हे पार्वती ! भगवान् सब को कठपुतलियों की तरह नचाते हैं ।

6. Uma the lord Rama dances us all up and down like so many puppets.

We are toys in the hands of Rama.

प्रभुपद प्रीति न सामुझ नीकी । तिनहिं कथा सुनि लागहिं फीकी ॥

भगवान् की कथा से किन्हें द्वेष है ।

जिन्हें भगवान् की भक्ति नहीं है और न जिनकी समझ ही ठिकाने है उनको भगवान् की कथा नहीं सुहाती ।

The men who dislike to hear his deeds.

If they have no understanding of true devotion to Lord, the tale will seem insipid enough.

भगवान् की कथा न सुनने वाला ।

जिन हरिकथा सुनी नहिं काना । श्रवणरंध्र अहिभवन समाना ॥
नयनन सन्त दरश नहिं देखा । लोचन मोरपंख के लेखा ॥
ते सिर कटु तूमरि सम तूला । जे न नमत हरि-गुरु-पद-मूला ॥

जिन्होंने भगवान् की कथा को नहीं सुना उनके कान साँप की बाँबी के समान हैं जिन्होंने संतों के दर्शन नहीं किये उनके नेत्र मोरपंख की तरह केवल शोभा ही की वस्तु हैं और उन लोगों के सिर कड़ुई तूमड़ी की तरह हैं जो भगवान् और गुरु के चरणों की वन्दना में न झुके हों ।

The men who do not like to hear his deeds.

For the ears that hear not Rama's name are mere snakia-holes; the eyes that have not seen his true vision are like the false eyes in a peacock's tail, the heads that have not bowed at the feet of Hari's priest are of no more worth than bitter pumpkins.

भगवान् की निन्दा सुननेवाले।

हरि हर निन्दा सुनहिं जे काना । पाप होय गोघात समाना ॥

जो लोग विष्णु भगवान् और शिवजी की निन्दा सुनते रहते हैं उनको गौ मारने का पाप होता है ।

Those who hear blasphe.

Those who open their ears to attacks upon Hari and Har are as guilty as if they had killed a cow.

भगवान् की कृपा की आवश्यकता ।

बिनु विज्ञान कि समता आवै । कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै ॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गन्ध कि पावै कोई ॥
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा । जल बिनु रस कि होय संसारा ॥

शील कि मिल बिनु बुध सेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गुसाँई॥
निजसुख बिनु मन होइ कि थीरा। परसि कि होइ विहीन समीरा॥
कवनिउसिद्धि कि बिनुविश्वासा। बिनुहरिभजन न भवभयनासा॥

बिनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिनु सप्रेहु, मन कि लहै विश्राम॥

जिस प्रकार आकाश के विना कोई अवकाश नहीं पा सकता, उसी प्रकार तत्वज्ञान के विना समदर्शिता नहीं आ सकती। जिस प्रकार गन्ध पृथिवी के विना उत्पन्न नहीं हो सकती उसी प्रकार श्रद्धा के विना कोई रस नहीं हो सकता, उसी प्रकार तप के विना कोई तेज नहीं पा सकता। जिस प्रकार कान्ति के विना मनुष्य स्वरूपवान् नहीं हो सकता उसी प्रकार बुद्धिमान् की सेवा किये विना मनुष्य शीलवान् नहीं हो सकता। जिस प्रकार कोई वायु के विना स्पर्श नहीं कर सकता उसी प्रकार सुख के विना मन स्थिर नहीं हो सकता। जिस प्रकार विना विश्वास के कोई सिद्धि नहीं हो सकती उसी प्रकार विना भगवद्भजन के संसार के भयों का नाश नहीं हो सकता।

विना विश्वास के भक्ति नहीं हो सकती और विना भक्ति के भगवान् प्रसन्न नहीं हो सकते और विना उनकी कृपा के हृदय को शान्ति नहीं मिल सकती।

Can the mind be at rest when ill at ease, any more than the sense of touch is possible without air? Without confidence there is no exercise of supernatural powers, and so without prayer to Hari there is no conquest over the terrors of

The Necessity of his grace.

existence. Without confidence there is no devotion, without devotion Rama is not moved, with out the grace of Rama no creature can dream of peace.

भगवद्भक्ति का उपाय ।

बिनु सत्संग न हरि कथा, तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गये बिनु राम पद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥

बिना भगवद्भक्तों की संगति के हरि कथा का बोध नहीं होता, बिना इसके मोह का नाश नहीं हो सकता, और बिना मोह के नाश के भगवान् के चरणों में दृढ़ प्रेम नहीं हो सकता अतएव सत्संग ही परमावश्यक वस्तु है ।

The means to acquire his love.

Except in the company of saints there is no talk about Rama; without that there is no overcoming delusion; till delusion is dispersed, there is no firm affection for Rama's feet.

ईश्वर की सर्वव्यापकता ।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥
अग जग मय सबरहित विरागी । प्रेम तें प्रभु प्रगटैं जिमि आगी ॥

ईश्वर सभी जगह समानरूप से वर्तमान हैं । संसार जानता है कि वे केवल भक्ति ही से प्रकट होते हैं । जिस प्रकार काठ में अग्नि (गर्मी) विद्यमान है (पर वह रगड़ से पैदा हो सकती है) उसी प्रकार स्थावर और जंगम सब में ईश्वर विद्यमान हैं पर वे केवल प्रेम ही के द्वारा प्रकट हो सकते हैं ।

The omnipresence of God.

Hari is omnipresent every where alike, but, as I well-know, is revealed by love. Present in all creation, animate or inanimate, passionless or unbiassed, he is revealed like fire by love.

जब होत विधाता वाम । ईश्वर का कोप ।
धूरि मेरु सम जनक यम, ताहि व्याल सम दाम ॥

जब मनुष्य पर ईश्वर का कोप होता है तब उसके लिये धूरि पर्वत के समान, पिता यम के समान और रस्सी सर्प के समान हो जाती है ।

Whoever incurs the anger of heaven, for him a grain of dust becomes vast as mount Meru, a father like the angel of death, and every rope a snake. The anger of God.

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ । ईश्वर के हाथ की बातें ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ ॥

वशिष्ठजी ने भरतजी से कहा कि होतव्यता अवश्यम्भावी है । हानि लाभ तथा जीना मरना यह (मनुष्य के हाथ में न हो कर) ब्रह्मा के हाथ में हैं ।

"Hearken, Bharat" thus sadly spoke the prince of sages Fate is over strong ; loss and gain, life and death, honour and dishonour are in God's hands." Fate.

भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल । अवतार का कारण ।
करत चरित धरि मनुज तन,

भगवान् अपनी कृपा के परवश हो अपने भक्त, पृथिवी, ब्राह्मण, गऊ और देवताओं के लिये मनुष्य रूप धर अवतार लेते हैं और मनुष्योचित चरित्र करते हैं ।

In His mercy he has taken the form of a man and performs human action ; out of love, to his faithful people and to Earth and Brahmans and Cause of incarnation.

cows and gods. On hearing them, the snares of the world are broken asunder.

सगुण उपासक। सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं। तिन कहँ राम भक्ति निज देहीं॥

जो भगवान् की सगुण भाव से उपासना करते हैं, वे मुक्ति नहीं चाहते, उनको भगवान् अपनी भक्ति देते हैं।

The worshippers of the incarnation of God. Worshippers of the incarnate are not rewarded with salvation but Rama gives them devotion to himself.

भक्त। रामहिं सेवक परम पियारा।

भगवान् को अपना भक्त बहुत प्यारा है।

Devotees. Rama has the greatest love for his servants.

भक्त। मोरे मन प्रभु अस विश्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा॥

मेरा यह विश्वास है कि भगवान् से अधिक महत्त्व के उनके भक्त हैं (जो हमारे लिये उनकी भक्ति सुलभ कर देते हैं)।

The devotee. I believe that the servants of Rama are even greater than Rama himself.

भक्तवत्सलता। सुनहु विभीषण प्रभु की रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती॥

हे विभीषण! भगवान् का स्वभाव ही अपने सेवकों से प्रेम करने का है।

Lord's love of his devotees. Listen, vibhishan to my experience of the Lord; he is ever affectionate to his servants.

भक्त का आदर। प्रभु अपने नीचहुँ आदरहीं। अग्नि धूम गिरि सिर तृण धरहीं॥

स्वामी अपने छोटों का भी आदर करते हैं। जैसे अग्नि धुआँ को और पहाड़ तृण को अपने से ऊपर रखते हैं।

Monarchs give honour to the lowest of their servants, in the same way as fire tops itself with smoke and a hill with grass.

Honour of the devotees.

जातें द्रवौं बेगि मैं भाई। सो मम भक्ति भक्त सुखदाई॥
भक्ति तात अनुपम सुख मूला। मिलै जु संत होय अनुकूला॥
सो स्वतंत्र अवलम्ब न आना। तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना॥

भक्ति।

किन्तु वह वस्तु जिससे मैं (भगवान्) शीघ्र प्रसन्न होता हूँ, मेरे भक्तों को आनन्द देने वाली भक्ति है। भक्ति किसी वस्तु पर निर्भर नहीं है, भक्ति अपूर्व सुख देने वाली है, किन्तु वह साधुओं के प्रसन्न होने ही से प्राप्त होती है।

But that at which I melt more quickly brother, is faith, which is the blessing of my votaries; it stands by itself without other spiritual aids, faith, brother is an incomparable source of happiness, and only to be acquired by the favour of a saint.

Bhakti.

प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई। अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई॥

भक्ति।

हृदय की कलुषता केवल भगवान् के प्रेम और भक्ति द्वारा ही साफ़ की जा सकती है।

Except by the water of faith and love, the interior stain can never be effaced.

Bhakti.

मानौं एक भक्ति कर नाता॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुण चतुराई॥
भक्तिहीन नर सोह न कैसे। बिन जल वारिद देखिय जैसे॥

भक्तिहीन पुरुष।

जो मनुष्य अच्छे वंश और ऊँची ज़ाति का होने पर भी

धन, शक्ति, परिवार, बुद्धि, चतुराई आदि रखने पर भी भक्तिहीन होता है, वह ठीक वैसे ही निःसार है जैसे विना जल का बादल ।

A man without love.

I (Rama) recognize no kinsmanship save that of faith ; neither lineage, family, religion, rank, wealth, power, connections, virtue nor ability. A man without faith is of no more account than a cloud without water.

भक्तिहीन ज्ञान ।

सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञानू । कर्णधार बिनु जिमि जलयानू ॥

जिस प्रकार विना मल्लाह के नाव निरर्थक है, उसी प्रकार भगवान् की भक्ति के विना (शुष्क) ज्ञान भी व्यर्थ है ।

Wisdom without love.

Without love for Rama knowledge is imperfect, like a boat without a helmsman.

भक्तिहीन गुण ।

भक्तिहीन गुण सुख सब ऐसे । लवण विना बहु व्यंजन जैसे ॥

मनुष्य के सारे गुण और सुख यदि भक्ति से प्लावित नहीं हैं तो विना नमक के भोजन के समान हैं ।

Virtue without love.

Without faith, what are virtues or blessings ? Like any condiments without salt.

भक्ति विना योग और ज्ञान ।

योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू । जहाँ न राम प्रेम परधानू ॥

जिस योग में राम की भक्ति प्रधान नहीं मानी गई वह योग त्याज्य योग है और जिस ज्ञान में राम की प्रधानता नहीं दी गई है वह ज्ञान वास्तव में अज्ञान है ।

Yoga and God without love,

That piety is impiety and wisdom unwisdom, in which love for Rama is not supreme.

श्वपच शबर खश यवन जड़, पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भवन विख्यात॥

भक्तिसे नीच भी पवित्र हो जाते हैं।

डोम, शबर (नट आदि), खश, यवन-म्लेच्छ, पापी, कोल और किरात भी राम का नाम लेने से (राम के भक्त होने से) पवित्र हो जाते हैं और संसार में विख्यात हो जाते हैं।

Even a Chândâl, a Savar a Khasiya a stupid foreigner, and out-caste, a Kol, or a Kirat, by repeating the name of Rama becomes most holy and renowned throughout the world.

Bhakti purifies even untachables.

बिनु हरिभजन न जाहि कलेशा॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाय राम प्रभुताई॥
जाने बिनु न होय परतीती। बिनु परतीति होय नहिं प्रीती॥
प्रीति विना नहिं भक्ति दृढ़ाई। जिमि खगेश जल की चिकनाई॥

भक्ति के दृढ़ करने का उपाय।

गुरु बिनु होय कि ज्ञान, ज्ञान कि होय विराग बिनु।
गावहिं वेद पुरान, सुखकिलहाहिंहरिभक्तिबिनु॥

विना भगवद्भजन के क्लेश नहीं मिट सकता। हे खगेश! विना भगवान् की कृपा के उनकी प्रभुताई नहीं जानी जा सकती। उनकी प्रभुताई के जाने विना उनमें प्रतीति (विश्वास) नहीं होती और विना अविचल विश्वास के उनसे प्रेम होना दुष्कर है। फिर जैसे जल से चिकनाई हुई वस्तु जल सूखने पर फिर जैसी की तैसी हो जाती है, उसी प्रकार प्रीति के विना भक्ति दृढ़ नहीं हो सकती।

गुरु के विना ज्ञान और ज्ञान के विना विराग नहीं हो सकता। वेद पुराणों की यह सम्मति है कि हरिभक्ति के विना सुख नहीं मिल सकता।

Some means to strengthen the love of God.

Without prayers to Hari your troubles will not yield. Hearken, king of birds, without Rama's grace there is no understanding of his power without understanding there is no confidence; without confidence there is no affection; without affection there is no consistency in faith; it slips away like oil on water. How can there be knowledge without a teacher? How can there be knowledge without self control, or (as the Vedas and Puranas declare) how can man attain to happiness without devotion to Hari?

नौ प्रकार की भक्ति।

नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भक्ति संतन कर संगा। दूसर रत मम कथा प्रसंगा॥

गुरु पद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान।
चौथि भक्ति मम गुण गण, करहु कपट तजि गान॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकासा।
छठ दम शील विरति बहुकर्मा। निरत निरंतर सज्जन धर्मा॥
सप्तम मोहिमय जग कहँ देखै। मोते संत अधिक कर लेखै॥
आठवि यथा लाभ सन्तोषा। सपनेहु नाहिं देखै परदोषा॥
नवम सरल सब से छलहीना। मम भरोस जिय हर्ष न दीना॥

मैं (रामचन्द्रजी) नौ प्रकार की भक्ति बतलाता हूँ। पहिली भक्ति साधुओं का सत्संग है। दूसरी मेरी कथा में प्रेम होना है। तीसरी भक्ति गुरु के चरणों की सेवा है। चौथी भक्ति हृदय से विश्वासपूर्वक मेरे गुणों का गान करना है। पांचवीं भक्ति मंत्र का जप, मुझ में दृढ़ विश्वास और मेरा भजन करना जो वेदोक्त है। छठवीं भक्ति इन्द्रिया

का जीतना, वैराग्य और सत्कर्म में प्रीति है। सातवीं भक्ति संसार को मुझसे भरा (राममय) देखना और मुझसे भी अधिक साधुओं को समझना है। आठवीं भक्ति जो कुछ मिले उसीसे सन्तोष कर लेना और दूसरों का कभी भी दोष न देखना। नवीं भक्ति सीधी तरह रहना, छल न करना, मुझ पर भरोसा रखना तथा हृदय को सदा हर्षित रखना ही है।

I will explain to you the nine kind of faith; hearken attentively and lay them up in your mind. The first step in faith is communion with the saints; the second a love for the legends relating to me. The third an incalculable step is devotion to the lotus feet of the guru; the fourth, singing my praise with a guileless purpose. The fifth as the vedas have expounded, prayer and the repetition, with an assured confidence, of mystic spells; the sixth, self governance, kindness, detachment from the world and in every action a loving and preserving piety; the seventh, seeing the whole world full of me, and holding the saints in yet greater account than myself, the eighth, contentment with what one has, without ever a thought of spying out fault in others; the ninth a guileless simplicity towards all and a hearty confidence in me without either exultation or dejection. Faith.

ज्ञान और भक्ति का भेद ।

ज्ञानहिं भक्ति नहीं कछु भेदा । उभय हरहिं भव संभव खेदा ॥

ज्ञान और भक्ति में कुछ भेद नहीं है क्योंकि दोनों ही संसार के शोकों को दूर करते हैं ।

The difference between faith and knowledge.

As far as the result is concerned, there is no difference between faith and knowledge because each of these puts an end to the troubles of existence.

आत्म सन्मान ।

लातहु मारे चढ़त सिर, नीच को धूरि समान ।

धूरि जो इतनी नीच वस्तु है कि सदा पैरों के नीचे रहती है वह भी तिरस्कार को सहन नहीं कर सकती । यदि उस पर ज़ोर से प्रहार किया जाय तो वह भी उड़ कर सिर पर आ जायगी ।

Self respect.

What is so low as the dust? Yet if stirred by a kick, it rises and falls upon your head.

आत्म-श्लाघा और सज्जन ।

निज कवित्त केहि लाग न नीका । सरस होउ अथवा अतिफीका ॥
जे परभणित सुनत हरषाहीं । ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥

अपनी कृति चाहें वह अच्छी हो या बुरी, सभी को अच्छी लगती है, यह साधारण नियम है । पर सज्जन वे हैं जो दूसरों की कृति सुन कर प्रसन्न होते हैं, किन्तु शोक है कि ऐसे मनुष्य संसार में बहुत कम हैं ।

A tolerant poet.

Every one is pleased with his own composition, whether it be pungent or insipid but those who praise another's composition are really good men, of whom there are few in the world.

क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम शरीरा॥
प्रगट सो तन तव आगे सोवा। जिव नित्य तुम केहि लग रोवा॥

आत्मा और शरीर।

यह शरीर पृथिवी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पांच तत्वों से बना है और वह (मरने पर भी) तुम्हारे सामने पड़ा है। तुम (उसके मरने पर) क्यों शोक करते हो, यदि तुम आत्मा के लिये शोक करते हो तो वह शोक व्यर्थ है क्योंकि आत्मा अमर है और मर नहीं सकता है।

Soul and body.

The body which is composed by the elements earth, water, fire, air and ether, is of no value. The mortal frame, which you see before you, sleeps, but the soul is eternal why then do you weep?

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी॥
सो माया वश भयउ गुसाईं। बँध्यो कीट मर्कट की नाईं॥
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परिगई। यदपि मृषा छूटत कठिनई॥
जब तें जीव भयो संसारी। ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी॥
श्रुति पुराण बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥
जिव हृदय तम मोह विशेखी। ग्रन्थि छुटै किमि परै न देखी॥

जीव।

जीव, ईश्वर का नाश न होने वाला अंश है, वह चेतन है, पवित्र है और स्वभाव ही से आनन्दरूप है। वही जीव माया के कारण शरीररूपी पिंजरे में ऐसा फँस गया है जैसे तोता या बन्दर बँध गया हो। जड़ (शरीर) और चेतन (जीव) में सम्बन्ध हो गया है। यद्यपि यह सम्बन्ध मिथ्या है तथापि उसका छुटना दुष्कर है। जब से जीव संसार में आया तब से यह बन्धन नहीं छूटा अतएव वह सुखी भी

न होने पाया । यद्यपि श्रुति और स्मृति ने इससे छूटने के बहुत उपाय बतलाये हैं तथापि वह उसमें और भी फँसता जाता है । जीव में (इस अवस्था में रहने के कारण) मोह और (अज्ञान) अन्धकार छाया है इस कारण यह सम्बन्ध नहीं छूट सकता ।

The soul.

The soul is the particle of the divinity immortal, intelligent, pure and naturally blossful. But sir, being over come by *Maya* it is caught, as it were a parrot or a monkey. The *infeebled*, intellect is bound with a knot, which though imaginary is difficult to untie. Thus the soul becomes worldly; there is no loosing the knot and it knows no happiness.

The Vedas and Puranas have declared many remedies; but there is no getting free, the entanglement is rather increased. The interior of the soul is full of the darkness of delusion and it can not see how the knot can be untied.

जीव में ज्ञान का संचार ।

यहि जग यामिनि जागहिं योगी । परमारथी प्रपंच वियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जग जागा । जब सब विषय विलासविरागा ॥

इस संसाररूपी रात्रि में वे ही साधक (योगी) जागते हैं जो दूसरों की भलाई करने वाले होते हैं और जिन्हें इस संसार के प्रपंच से कोई मतलब नहीं होता । जब आत्मा सभी सांसारिक सुखों से विमुख हो जाय तभी जानो कि उसे आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है ।

In this world of darkness they only are awake who detach themselves from the material and are absorbed in contemplation of the supreme: nor can any soul be regarded as aroused from slumber till it has renounced every sensual enjoyment. Seekers after truth.

परवश जीव स्ववश भगवन्ता। जीव अनेक एक श्रीकन्ता॥ जीव और
द्विधा भेद यद्यपि कृत माया। बिनु हरि जाय न कोटि उपाया॥ ब्रह्म।

जीव परतन्त्र है, ईश्वर स्वतन्त्र है, जीव बहुत है—ईश्वर केवल एक है। यद्यपि यह दो प्रकार का भेद माया ही के कारण है किन्तु लाख यत्न करो वह भगवान् की कृपा के विना नहीं हट सकता।

The soul is dependent, God is independent: souls are countless, but is God is one: though this apparent distinction made by *Máyá* (illusion) is false, yet it can not be removed without his grace. Comparison between God and soul

कर्म प्रधान सत्य कह लोगू। कर्म।

लोग सच ही कहते हैं कि कर्म ही हमारे जीवन में मुख्य और अमिट वस्तु है।

Will do men say, 'Fate is supreme.' Fate.

कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा॥ कर्म।

ईश्वर ने इस संसार में कर्म ही को मुख्य स्थान दिया है, जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

He has made fate the sovereign of the Fate.

universe, and every one has to taste the fruits of his own actions.

कर्मरेख । अस विचारि सोचहु मति माता । सो न टरै जो रचै विधाता ॥

यह सोच कर सोच मत करो कि ब्रह्मा का लिखा हुआ मिट नहीं सकता ।

The fate. Be not troubled, my mother, with these thoughts, for god's plans are unalterable.

कर्म की अमिट । होइहै वही जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावहि शाखा ॥

जो कुछ भगवान् की इच्छा है, वह अवश्य भावी है ।

The ordained fate. Whatever Rama has ordained will come to pass so why spin out any longer discussion ?

कर्म का फल । शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी । ईश देइ फल हृदय विचारी ॥
करै जो कर्म पाव फल सोई । निगम नीति अस कह सबकोई ॥

भगवान् मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मों को देख कर उन्हींके अनुसार उन्हें पुरस्कार या दण्ड देते हैं । वेद और नीति सब कोई यही कहते हैं कि जो कर्म करता है उसे ही फल भी मिलता है ।

Karma and its fruits. That, God after weighing good and bad actions and mentally considering them, apportions their reward, and the doer reaps the fruit of his own doings, this is the doctrine of the scriptures and the verdict of the man's mind.

कर्म के फल । जन्म मरण सब सुख दुख भोगा । हानि लाभ प्रियमिलन वियोगा ॥
काल कर्म वश होहिं गुसाईं । बरबस रात दिवस की नाईं ॥

जीना और मरना, सुख और दुःख, लाभ और हानि,

मिलन और वियोग—ये सब समय और कर्म पर निर्भर हैं तथा दिन और रात की तरह इस जीवन के लिये अवश्यम्भावी वस्तुएँ हैं।

Events of life are governed by fate.

Life and death, pleasure, pain and all enjoyments; loss and gain, the society of friends and their bereavement; all sir, are governed by time and fate as unalterably as the succession of night and day.

कर्म की विचित्र गति।

और करे अपराध कोउ, और कर्म फल भोग।
अति विचित्र भगवन्त गति, को जग जाने योग॥

(इन सब नियमों के होते हुए भी कभी कभी ऐसा देखा जाता है कि) क़सूर तो कोई करता है और उसका फल कोई दूसरा ही भोगता है। भगवान् की यह गति बड़ी विचित्र है इसे कौन समझ सकता है?

Unexplainable ways of Karma.

But for one to sin and another to reap its reward, the ways of God are most mysterious; who is there in the world who can comprehend them?

कर्म और सुख दुःख।

काहु न कोउ सुखदुखकर दाता। निजकृत कर्म भोग सब भ्राता॥

कोई भी किसीको सुख या दुःख देने वाला नहीं है, सभी कोई (हे भाई!) अपने ही कर्मों का फल भोगते हैं।

Karma the cause of happiness and distress.

No man is the cause of another man's joy or sorrow; all is the fruit of once own actions, brother.

कर्म गति। कठिन कर्म गति कछु न बसाई ।

कर्म की गति ऐसी कठिन है कि उसके विरुद्ध कुछ नहीं किया जा सकता ।

Fate. Fate is irresistible.

कर्म गति। जनि मानहु जिय हानि गलानी । काल कर्म गति अघटित जानी॥

समय और कर्म का फल अवश्यम्भावी समझ कर (किसी विपत्ति के पड़ने पर) हृदय को निराश मत करो ।

Ways of the Karma. Think no more of your loss and vexation; remember that the course of time and fate is unalterable.

परोपकार। श्रुति कह परम धर्म उपकारा॥

परहित लागि तजै जो देही । संतत संत प्रशंसहिं तेही ॥

वेद में यह कहा गया कि (दूसरों का) उपकार करना ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है । जो लोग दूसरों की सेवा करते करते अपने शरीर की बलि चढ़ा देते हैं सज्जन निरन्तर उन्हीकी प्रशंसा किया करते हैं ।

[मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये ।
जीता है वह जो मर चुका इन्सान के लिये ॥]

स्वामी रामतीर्थ ।

Charity. The scriptures say charity is the highest of the virtues, and one who gives his life for another is ever the praise of the saints.

परोपकार। पर हित सरिस धर्म नहिं भाई ।

दूसरों का उपकार करने के बराबर कोई धर्म नहीं है ।

O brother, there is no religion like charity. Charity.

परहित बस जिनके मन माहीं। तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥ परोपकारी।

जिनके हृदय में परोपकार ही बस रहा है, उनके लिये संसार में कोई बात अलभ्य या अनहोनी नहीं है।

There is nothing in the world beyond the reach of those who devote their souls to the good of the others. Servants of humanity.

पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥ पर उपदेश और आचरण।

ऐसे लोग तो बहुत हैं जो दूसरों को उपदेश भरी शिक्षा दे सकते हैं किन्तु स्वयं उनका अनुसरण करने वाले बहुत ही कम हैं।

There are many men who excell in giving advice, but the people who put it in practice are not very plentiful. The advice and to act accordingly.

चहिय विप्र उर कृपा घनेरी। ब्राह्मण और दया।

ब्राह्मण का स्वभाव ही दयाशील होता है अतएव उसके हृदय में दया का होना आवश्यक है।

A Brahman's heart should be all mercy. The heart of a Brahman

तपबल विप्र सदा बरिआरा। तिनके कोप न कोउ रखवारा॥ ब्राह्मण का कोप।

तप के कारण ही ब्राह्मण में शक्ति है, उनका क्रोध ऐसा भयंकर होता है कि कोई भी उससे अभय नहीं दे सकता।

By the virtues of penance a Brahman is very powerful and there is none who can deliver from his wrath. The anger of a Brahman

ब्राह्मण का शाप ।

एकहि डर डरपत मन मोरा । प्रभु महिदेव शाप अतिघोरा ॥

मुझे केवल एक ही डर है और वह डर ब्राह्मणों के भयंकर शाप का है ।

The curse of a Brahman.

But my soul is disturbed by one fear, the curse of a Brahman is something most terrible.

ब्राह्मण का सन्तुष्ट होना ।

मंगल मूल विप्र परितोषू । दहइ कोटि कुल भुसूर रोषू ॥

ब्राह्मण को सन्तुष्ट करने ही में कल्याण है, क्योंकि उनके क्रुद्ध हो जाने से कुल का अमङ्गल होता है ।

Satisfaction of a Brahman.

The satisfaction of a Brahman is the root of all happiness, while his wrath consumes a thousand generation.

विप्र भय ।

विप्र वंश की अस प्रभुताई । अभय होहिं जो तुमहिं डराई ॥

ब्राह्मणों का ऐसा महत्त्व और तेज है कि जो व्यक्ति इनसे डरता है, उसे फिर किसी वस्तु या व्यक्ति से डरने की आवश्यकता नहीं रह जाती । क्योंकि ब्राह्मण अपने शरणागतों की (जो उनसे डरते हों उनकी) सदा ही रक्षा करते हैं और उन्हें अभय दान देते हैं ।

The fear of Brahman.

But so great is the power of Brahmanical descent that the man who fears you, need not fear anybody else.

योग्य द्विज ।

धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ।

वह द्विज धन्य है जो धर्मशील है ।

[ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य द्विज कहलाते हैं ।]

A worthy Dvij.

Blessed is the dvij who does his duties.

अग बहु नर सरि सर सम भाई। जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई॥ सज्जन का
सज्जन सुकृत सिन्धु सम कोई। देखि पूर विधु बाढ़हिं जोई॥ स्वभाव।

संसार में ऐसे आदमी बहुत हैं जो तनिक भी प्रतिष्ठा या धन पाते ही नदी या तालावों की तरह अपनी मर्याद से बाहर हो जाते हैं और धन मद से मतवाले हो जाते हैं, किन्तु ऐसे आदमी (सच्चे सज्जन) बहुत कम हैं, जो समुद्र की तरह पूर्ण चन्द्रमा (दूसरे) का विभव देख कर बढ़ते हैं। इसी लिये कहा है—

["मान योग्य नहिं होत कोऊ कोरो पद पाये" हरिश्चन्द्र।]

There are many enough like the rivers, which on getting a rain-fall swell out a flood of their own, but barely one like the generous ocean, which swells on beholding the fulness of the moon.

The nature of gentlemen.

जिनके लहहिं न रिपु रण पीठी। नहिं लावहिं परतिय मन दीठी॥ सच्चे
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं। ते नरवर थोड़े जग माहीं॥ सज्जनों के लक्षण।

जो व्यक्ति युद्ध में अपने शत्रुओं को पीठ नहीं दिखाते, जो पराई स्त्री की ओर देखने का विचार भी नहीं करते और जो घर पर आए हुए भिखारियों को विमुख नहीं फेरते, वे सज्जन इस संसार में बहुत नहीं हैं।

And rare, indeed, in the world are the men who neither turn their back upon the foe in the battle nor covet their neighbour's wife, and from whom no beggar meets a *rebuff*.

The qualities of Gentlemen.

साधु तें होय न कारज हानी।

सज्जन पुरुष से कभी किसी का अहित नहीं होता।

सज्जन से कार्य हानि नहींहोती।

A good man.

A good man will never suffer to come in the way of others.

सज्जन भी कभी कभी भलाई करने से चूक जाते हैं ।

काल स्वभाव कर्म बरिआई । भलेउ प्रकृतिवश चुकइ भलाई ॥
सो सुधारि हरिजन इमि लेहीं । दलि दुख दोष विमल यश देहीं॥

कर्मों के अनुसार, मनुष्य स्वभाव और समय के प्रभाव से कभी कभी सज्जन भी अनुचित काम कर बैठते हैं—जैसे यश बहुत से दुःखों और दोषों को छिपा लेता है वैसे ही भक्त लोग भी उस भूल को सुधार लेते हैं ।

सब कोई भलाई बुराई को समझते हैं। किन्तु लोग अपनी रुचि के अनुसार चुन लेते हैं। भले लोग भलाई करने के लिये कमर कसे रहते हैं उनमें जितनी अधिक भलाई हो उनकी उतनी ही बड़ाई होती है, जिस प्रकार अमृत में जितनी अधिक संजीविनी शक्ति हो वह उतना ही अच्छा अमृत कहा जाता है, उसी प्रकार नीच अपनी नीचता की पराकाष्ठा दिखलाने में बड़ाई समझते हैं, जिस प्रकार ज़हर की अनुछाई उसकी तेज़ी पर निर्भर है उसी प्रकार नीचों में वही सराहनीय है जो नीच हो ।

Even good persons err from virtue.

But conquered by time, temperament or fate, even the good, as a result of their humanity may err from virtue ; but Hari takes their body. So to speak and corrects it, and removing all sorrow and sin, cleanses and glorifies them.

सज्जन और दुर्जन ।

सन्त असन्तन की अस करणी । जिमि कुठार चन्दन आचरणी ॥
काटै परशु मलय सुनु भाई । निज गुण देइ सुगंध बसाई ॥

तांते सुर सीसन चढ़त, जगवल्लभ श्रीखण्ड।
अनल दाह पीटत घनहि, परशु बदन यह दण्ड॥

सन्तों की उपमा चन्दन से और दुष्टों की उपमा कुल्हाड़ी से दी गयी है, कुल्हाड़ी चन्दन को काटती है उस पर प्रहार करती है—किन्तु चन्दन कुल्हाड़ी के साथ अपकार नहीं करता प्रत्युत वह उसको सुगन्धित ही कर देता है। इसी गुण से चन्दन तो देवताओं के मस्तक पर चढ़ाया जाता है और इसी अवगुण से कुल्हाड़ी को अग्नि में तपा कर लोग उसे घन से पीटते हैं।

The conduct of the good to the wicked is like that of the sandal tree to the axe, for, see brother, the fragrant wood imparts its perfume to the very iron that fells it.

A gentle man and a wicked fellow.

For this reason sandal wood is the desire of the world and has the honour of being put on the head of gods; while the axe, for its punishment, has been heated in the fire and well-hammered.

सज्जन और दुष्ट।

सन्त सहहिं दुख परहित लागी। परदुख हेतु असन्त अभागी॥

महात्मा तो दूसरों को दुःख से बचाने के लिये और दुष्ट दूसरों को दुःख में डालने के लिये कष्ट सहते हैं।

The difference between a saints and a wicked fellow.

The saints spare no pains to relieve others while the wicked to entangle them.

सन्त।

सुनु मुनि सन्तन के गुण कहहूँ। जेहितें मैं उनके वश रहहूँ॥
षट विकार तजि अनघ अकामा॥अचल अकिंचन शुचि सुखधामा॥

अमितबोध परमारथ भोगी । सत्यसार कवि कोविद योगी ॥
सावधान ममता मदहीना । धरि भक्तिपथ परम प्रवीना ॥
गुणागार संसार दुख, रहित विगत सन्देह ।
तजि मम चरणसरोज प्रिय, तिन कहँ देह न गेह ॥
निजगुण श्रवण सुनत सकुचाहीं । परगुण सुनत अधिकहर्षाहीं ॥
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती । सरलस्वभावसबहिंसनप्रीती ॥
जप तप व्रत अरु संयम नेमा । गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया । मुदिता ममपद प्रीति अमाया ॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना । बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मान मद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाँऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला । हेतुरहित परहित रतशीला ॥

हे मुनि ! मैं (रामचन्द्रजी) तुमसे भक्तों के गुण कहता हूँ जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ । वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर और अहङ्कार नामक छः विकारों के वश में नहीं रहते । वे कामनाओं को जीत चुके हैं । वे स्थिरचित्त होते हैं । उनके हृदय में धन का लोभ नहीं होता । उनका हृदय पवित्र और आनन्द से परिपूर्ण होता है । वे बड़े ज्ञानी होते हैं, परमार्थ ही करते हैं, सत्य के सार के बखानने में कवि के समान होते हैं, सत्य असत्य को जानने वाले पण्डित होते हैं, तथा इन्द्रियों के जीतने में योगी की तरह होते हैं । वे सदा सचेत रहते हैं, उनके हृदय में ममता और अहङ्कार नहीं रहता तथा वे भक्ति के मार्ग में धैर्यवानों की तरह पटु होते हैं । वे गुणों के निधान होते हैं, उन्हें सांसारिक दुःख नहीं व्यापता, उनके हृदय में सन्देह स्थान नहीं पाता, तथा मेरे चरणों के सिवाय और कहीं भी उनका

मन नहीं रहता। वे अपने गुण सुनने में संकोच करते हैं, तथा दूसरों की बड़ाई सुन कर बड़े प्रसन्न होते हैं। वे शत्रु मित्र के लिये एक से हैं, वे नीति ही का अनुसरण करते हैं। वे जप, तप, नेम और व्रत करते हैं तथा भगवान् गुरु और ब्राह्मण के चरणों ही से प्रेम करते हैं। श्रद्धा, क्षमा, मित्रता, दया उनके हृदय में होती है और मुझसे वे निष्कपट प्रेम करते हैं। वैराग्य, ज्ञान, नम्रता और विज्ञान तथा वेदों के वे जानकार होते हैं। वे किसीसे आदर नहीं चाहते, कभी पाखंड या अभिमान नहीं करते और भूल कर भी कुमार्ग में पैर नहीं रखते। वे सदा मेरी लीला गाया और सुना करते हैं तथा वे निःस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करते हैं।

They (the saints) have overcome the six disturbing influences; are sinless, passionless, and imperturbable; have no worldly goods, but live a life of chastily and contentedness; their wisdom is immeasurable; they are without desires and temperate in enjoyment; ocean of truth, inspired bards, practiced in meditation; circumspect; void of pride and arrogance; persevering and eminently wise in the mystery of salvation, mines of virtues, free from the troubles of the world and with all their doubts solved; who, rather than abandon my lotus feet, account neither life nor home who are abashed when they hear themselves praised, and exceedingly glad to hear the praises of others; who are *equable* and calm, consistent in virtuous practice; honest and kindly disposed to Saints.

all men, distinguished for prayer, penance, religious observances, temperance, self-denial and performance of pious vows; for their devotion to guru to Gobind and to Brahmans; for faith, forbearance, charitableness and compassion; for a *rapturous* love of my feet, a superiority to all material delusions; and absolute composure, discrimination, humility and knowledge and for doctrine in strict accordance with the Vedas and Puranas, who never display ostentation, arrogance, or pride, nor ever by any chance set their foot on the way of wickedness; who are always either hearing or singing my acts and have no selfish object, but are devoted to the good of the others.

सन्त ।

उमा सन्त की यही बड़ाई । अनभल करत जो करै भलाई ॥

हे पार्वती ! साधुओं का महत्त्व इसीमें है कि वे अपने साथ बुराई करने वालों के साथ भी भलाई ही करैं ।

Saint.

This is the virtue of the saints, Uma! that they return good for evil.

सन्तों का स्वभाव ।

पर उपकार वचन मन काया । सन्त स्वभाव सहज खगराया ॥

साधुओं का स्वभाव बड़ा सरल होता है वे सब तरह से सदा दूसरों की भलाई करने के लिये प्रस्तुत रहते हैं ।

The nature of the saints.

To try their best to do good to others is a part of the nature of the saints.

सन्तों का दर्शन ।

सन्त मिलन सम सुख कछु नाहीं ।

साधुओं के सत्संग के समान और कोई सुख नहीं है ।

There is no pleasure as great as the company of the saints.

The company of the saints.

साधु चरित शुभ सरिस कपासू। निरस विशद गुणमय फल जासू॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। वन्दनीय जेहि जग यश पावा॥

साधु और सज्जन।

साधुओं का स्वभाव कपास की तरह परोपकारी है। उनका चरित्र नीरस है, किन्तु उसका फल बड़ा लाभदायक है, वे स्वयं कष्ट सहते हैं किन्तु दूसरों के दोषों को ढाँक देते हैं, इसी कारण वे वन्दनीय हैं।

यहाँ गोस्वामीजी ने साधुओं के स्वभाव की उपमा कपास से दी है। कपास का जन्म परोपकार के लिये है। वह नाना दुःखों को सह कर बढ़ता है, काता जाता है, बटा जाता है, बुना जाता है। इन सब बातों में उसे दुःख सहन करने पड़ते हैं और वह यह सब दुःख सह कर कपड़ा बन कर दूसरों के दोषों को (शरीर को) ढाँकता है। यद्यपि कपास कोई रसदार वस्तु नहीं है, किन्तु वह इतना परोपकार करता है। उसी प्रकार साधुओं का वैराग्य है। वह नीरस और कठिन साधन है। उसकी साधना में नाना प्रकार के कष्ट हैं किन्तु वह ज्ञानमय और पवित्र है। उससे संसार के लोगों का हित होता है।

The good deeds of the faithful saints resemble the produce of the cotton plant in its austerity, purity and manyfold usefulness, and in its hiding the defects even of those by whom it has been most roughly treated; reverence to the saints,

The praise of the saints and good persons.

whatever the age and clime in which their glory was consumated.

साधु प्रत्येक वेष में सम्मान पाते हैं।

किये कुवेष साधु सन्मानू। जिमि जग जामवन्त हनुमानू॥

सज्जन किसी भी वेष में क्यों न रहै, उसे उचित सम्मान मिलता ही है। जैसे यद्यपि हनुमान् और जामवन्त पशु-योनि में थे, तथापि वे गुण के कारण पूजे जाते हैं।

The good are honoured, in all position.

The good are honoured, notwithstanding their mean appearance, like the bear Jambant or the monkey Hanuman.

साधु और असाधु में भेद।

दुखप्रद उभय बीच कछु वरणा।
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं। मिलत एक दारुण दुख देहीं॥
उपजहिं एक संग जल माहीं। जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुयश अपलोक विभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सर व्याधू॥
गुण अवगुण जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

भले भलाई पै लहहिं, लहैं निचाई नीच।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच॥

सज्जन और दुष्ट दोनों ही दुःखदाता हैं। सज्जन से अलग होते समय मरने के समान कष्ट होता है और दुष्ट से मिलते ही कष्ट मिलना आरम्भ हो जाता है। जिस प्रकार कमल और जोंक दोनों जल में उत्पन्न होते हैं किन्तु दोनों का स्वभाव अलग अलग है उसी प्रकार सज्जन और दुष्ट हैं। साधु अमृत के समान हैं, दुष्ट शराब की तरह हैं।

अमृत और सुरा दोनों ही समुद्र से निकलते हैं, पर दोनों के गुण भिन्न भिन्न हैं। इसी प्रकार साधु और खल संसार ही में पैदा हुए हैं पर उनके गुण दोष भिन्न २ हैं। वे अपने कर्मों ही के द्वारा भलाई या बुराई कमाते हैं। साधु अमृत, चन्द्रमा और गंगाजी की तरह हैं जो अपने संग से मनुष्य को अमर करते उसका हृदय शीतल करते और उसके कर्मों को बढ़ाते हैं किन्तु खल विष और कर्मनासा नदी के समान हैं जिनके साथ से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, उनका हृदय जल जाता है और उनके कर्म नष्ट हो जाते हैं।

The difference between the saints and the wicked.

I propitiate at once the feet of saints and sinners, who each give pain, but with a difference for the first kill by absence, while the second torture by their presence, as opposite as a lotus and a beach though both alike are produed in water. Good and bad thus resemble nector and intoxicating drink, which were both begotten by the one great ocean, each by its own acts attains to pre-eminence; the one in honour the other in dishonour compare with the good, ambrosia, or the moon, or the Ganges, and with the bad, poison, or fire, or the river Karmanásá, virtue and vice are known to all; but whatever is to a man's taste that seemeth him good.

The good aim at goodness, and the vile at vileness: ambrosia is esteemed for giving immortality, and poison for causing death.

सत्य । सत्य मूल सब सुकृत सुहाये ।

जितने पुण्य हैं, उन सबकी जड़ सत्य है ।

Truth. Truth is the foundation of all merits and virtues.

सत्य । धर्म न दूसर सत्य समाना ।

सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है ।

Truth. There is no virtue equal to truth.

सत्यवादी पुरुष और धन । तनु तिय तनय धाम धन धरणी । सत्यसंध कहँ तृणसम वरणी

जो मनुष्य सत्य का प्रेमी होता है, वह सत्य के आगे शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, दौलत, जायदाद आदि को तिनके के बराबर समझने लगता है ।

A truthful person never cares for the worldly wealth. It is said that life, wife, sons, home, wealth, nay the whole of world, is worth a straw to a truth abiding person.

सच्चा ज्ञानी । ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं । देखत ब्रह्मरूप सब माहीं ॥

ज्ञान उस अवस्था को कहते हैं जहाँ पहुँचने पर मनुष्य मान, अपमान, वर्ण आश्रम आदि का भेद भूल जाता है और सब संसार को ईश्वरमय देखने लगता है ।

True sage. Knowledge, in which there is no particle of self consciousness, sees the supreme spirit equally in all things.

सच्चा वैरागी । कहिय तात सो परम विरागी । तृण सम सिद्ध तीन गुण त्यागी॥

वही मनुष्य सच्चा वैरागी है जिसने रजोगुण तमोगुण और सतोगुण को बिल्कुल छोड़ दिया है ।

He, brother, is to be reckoned chief of stoics, who abandons his fortune, and the three elements of which the universe is composed as if they are of no more account than a blade of grass. True ascetic.

जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलहि न कछु सन्देहू॥ सच्चा स्नेह।

यदि किसी व्यक्ति की किसी व्यक्ति से मिलने की उत्कट इच्छा है या हार्दिक स्नेह है, तो अवश्य ही कालान्तर में वह उसे मिलेगा।

Wherever there is true affection of soul to soul, union will follow beyond any doubt. True affection.

बड़े भाग्य पाइय सत्संगा। बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा॥ सत्संग।

बड़े भाग्य से सत्संग मिलता है जिसके मिलते ही विना परिश्रम किये संसार से मुक्ति हो जाती है।

The fellowship of the saints is the greatest of blessings; it at once effects a severance from the world. The fellowship of the saints.

जब कछु काल करिय सत्संगा। तबहिं होय सब संशय भंगा॥ सत्संग।

हृदय के सब सन्देह केवल तभी जा सकते हैं जब कुछ दिनों विद्वानों और हरिभक्तों का साथ किया जाय।

One's doubts can not be settled till one remains in the company of the saints for a long time. The company of the saints.

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग। सत्संग का सुख।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि तराजू के एक पलड़े में तो स्वर्ग तथा अन्य लोकों के सुख रखो, और दूसरे में सत्संग का सुख रखो। तो भी वे सब मिल कर इस एक की बराबरी नहीं कर सकेंगे।

Pleasure of good company.

In one scale of the balance put the bliss of heaven and the final emancipation of the soul from the body, but it will be altogether out weighed by even a small fraction of the joy that results from communion with saints.

सत्संगति का फल।

सुनि आश्चर्य करै जनि कोई। सत्संगति महिमा नहिं गोई॥
वाल्मीकि नारद घटयोनी। निज निज मुखन कही निज होनी॥
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना॥
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई॥
सो जानब सत्संग सुभाऊ। लोकहु वेद न आन उपाऊ॥
बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
सत्संगति मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
विधिवश सुजनकुसंगतिपरहीं।फणिमणिसम निजगुण अनुसरहीं

वन्दौं सन्त समान चित, हित अनहित नहिं कोय।
अंजलि गत शुभ सुमन जिमि, सम सुगंधि कर दोय॥

सत्संगति की महिमा छिपी नहीं है। उसे सुन कर कोई आश्चर्य न करैं। भगवान् की कृपा के विना सत्संगति प्राप्त नहीं होती और विना सत्संग के विवेक नहीं होता। सत्संगति आनन्दरूपी मंगलकारिणी जड़ है जिससे सिद्धिरूपी फल और साधनरूपी फूल उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार

पारस पत्थर के छू जाने से लोहे ऐसी निकृष्ट धातु भी सोना हो जाती है, उसी प्रकार दुष्ट मनुष्य भी सत्संग से सुधर जाते हैं। और दैववशात् यदि सज्जन भी कुसंगति में जा पड़ें तो वहाँ भी वे अपनी सज्जनता नहीं छोड़ते। साधुओं का चित्त पक्षपात रहित होता है। उनमें हित या अनहित करने का भाव ही नहीं रह जाता। भलाई करना उनके स्वभाव के अन्तर्गत हो जाता है। उनका स्वभाव उन पुष्पों के समान है जो अंजली में जा कर दोनों हाथों को समान रूप से सुगंधित कर देते हैं और यह सोच कर कि इसीने हमको तोड़ा था दाहिने हाथ को कम गन्ध नहीं देते।

उमा सन्त की यही बड़ाई। मंद करत जो करे भलाई॥

[हिन्दुओं का ऐसा विश्वास है कि पारस नाम का एक अलभ्य पत्थर है जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि मणियारे साँप में एक मणि होती है जो विष के प्रभाव को नष्ट कर देती है।]

Let no one marval at hearing this, for the influence of good company is no mystery. Intercourse with the good is attainable only by the blessing of Rama, and without it wisdom is impossible; it is the root of all joy and felicity, its flowers are good works and its fruit perfection. By it the wicked are reformed, as when by the touch of the philosopher-stone a vile metal (iron) becomes gold. If by mischance a good man falls into evil company, like the jewel in a serpent's head, he still retains his virtue. The influence of good company.

I reverence the saints of equal temperaments,

who regard neither friend nor foe, like a gracious flower which sheds its fragrance alike on both infolding hands.

सत्संग और कुसंग।

हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु वेद विदित सबकाहू॥

विद्वान् और मूर्ख सब जानते हैं कि बुरी संगति से हानि और भली संगति से लाभ होता है।

The good and the bad company.

Bad company is loss, and good company is gain, this is a truth recognised both by the world and by the Veda.

सत्संग से बुरे भी भले हो जाते हैं।

गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा। कीचहु मिलहि नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन शुक सारी। सुमिरहिं राम देहिं गण गारी॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिय पुराण मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होय जलद जग जीवनदाता॥

ग्रह भेषज जल पवन पट, पाय कुयोग सुयोग।
होय कुवस्तु सुवस्तु सब, लखहिं सुलक्षण लोग॥

साथ से छोटे भी बड़े हो जाते हैं। हवा के साथ रहने से नीचे रहने वाली धूलि भी आकाश में चढ़ जाती है, वही धूलि जल की कुसंगति में पड़ने से कीचड़ हो जाती है। तोता, मैना—साधु और दुष्ट दोनों के यहाँ होते हैं पर सत्संग के कारण वे साधु के यहाँ राम राम पढ़ते हैं और दुष्ट के यहाँ गाली बकते हैं। धुआँ कुसंग से यद्यपि काला हो जाता है तथापि फिर जल का सत्संग करने से वह स्याही बन कर भगवद् कीर्त्ति लिखता है, फिर वही धुआँ जल और अग्नि के संग से संसार का उपकारी बादल बन जाता है।

ग्रह (ज्योतिष के ग्रह), ओषधि, जल, वायु और वस्त्र अच्छे या बुरे के योग से अच्छे या बुरे हो जाते हैं । जैसे यदि कोई ग्रह किसी स्थान में रहने से अच्छा और दूसरे में रहने से बुरा कहलाता है । ओषधि गुण करने से अमृत और अवगुण करने से विष कहलाती है; जल यदि गंगाजी में पड़ा तो गंगाजल हो गया और यदि नाली में पड़ा तो अपवित्र हो गया, वायु यदि सुगंधपूर्ण है तो अच्छा है यदि किसी नाली हो कर दुर्गन्ध लिये आता है तो बुरा है । वस्त्र यदि जीवित अवस्था में पहिना जाय तो अच्छा है यदि मृतक के ऊपर अच्छे से अच्छा डाल दो तो कफन कहला कर बुरा हो जायगा । तात्पर्य यह है कि सत्संग ही से वही वस्तु अच्छी हो जाती है और कुसंग से वही वस्तु बुरी हो जाती है ।

In company with the wind the dust flies heavenwards ; if it joins water, it becomes mud and sinks. According to the character of the house in which a parrot or a *maina* is trained, it learns either to repeat the name of Rama or to utter abuses. With the ignorant the soot is an useless refuse, but it may make good ink, and be used even for copying a Purana, provided it falls into good hands ; while water, fire and air combine to become an earth refreshing rain-cloud.

The changes wrought by company.

The plants, medicines, water, air, cloths, all are good or bad things according as their accompaniments are good or bad ; and people observe this phenomenon.

जगत् में यश अपयश कर्म से मिलता है।

सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नाम भेद दुहुँ कीन्ह
शशि पोषक शोषक समुझि, जग यश अपयश दीन्ह ॥

दोनों (शुक्ल और कृष्ण) पक्षों में रोशनी बराबर बाँट दी गयी है—पर एक पक्ष तो रोशनी बढ़ा कर चन्द्रमा का पालन करता है, और दूसरा उसे घटा कर उसका नाश करता है। इसी भेद से लोग एक को अच्छा और दूसरे को बुरा कहते हैं।

Both lunar fortnight are equal as regards darkness and light, but a difference in name has wisely been made, and as the moon increases or wanes the fortnight is held in high or low esteem.

कुसंगति का फल।

को न कुसंगति पाय नसाई। रहै न नीच मते चतुराई ॥

जिसने कुसंगति की वही नष्ट हुआ। इतिहास में एक भी ऐसा उदाहरण नहा है जिसमें कुसंगति में रहने वाला नष्ट न हो गया हो। जो नीच पुरुषों की सम्मति पर चलना आरम्भ करता है उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

The results of bad company.

Who is not spoiled by evil communication. There is no profit in taking counsel with the vile.

बुरों और भलों का संग।

सन्त पन्थ अपवर्गकर, कामी भवकर पन्थ।

साधु महात्मा मोक्ष के मार्गदर्शक हैं और कामी संसार में डालने वाले हैं।

The consorts with the saints leads to final salvation, but that with the sensual persons to endless transmigration.

The good and the bad company.

इमि कुपन्थ पग देत खगेशा। रहत बुद्धि बल नहिं लवलेशा॥ कुपन्थ।

जो लोग कुपन्थ में पैर रखते हैं उनमें बुद्धि की शक्ति नहीं रह जाती।

As soon as one turns one's steps, O Khagesha, to a vile course, not a particle of one's intellect or strength of body is left in one.

The man who seeks bad path.

सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ। भूलेहु संगति करिय न काऊ॥ दुष्ट।
तिन कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालहि हरहाई॥
खलन हृदय अति ताप विशेखी। जरहिं सदा पर सम्पति देखी॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई। हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई॥
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन॥
वैर अकारण सब काहू सों। जो करु हित अनहित ताहू सों॥
झूठै लेना झूठै देना। झूठै भोजन झूठ चबेना॥
बोलहिं वचन मधुर जिमि मोरा। खाहिं महा अहि हृदय कठोरा॥

परद्रोही परदार रत, पर धन पर अपवाद।
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन। शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन॥
काहू की जो सुनहिं बड़ाई। श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥
जब काहू की देखहिं विपती। सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती॥
स्वारथ रत परिवार विरोधी। लम्पट काम लोभ अति क्रोधी॥
मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं। आप गये अरु घालहिं आनहिं॥
करहिं मोह वश द्रोह परावा। सत्संगति हरिकथा न भावा॥

अवगुणसिन्धु मन्दमति कामी। वेद विदूषक परधन स्वामी॥

दुष्टों का स्वभाव सुनो। भूल कर भी उनकी संगति न करना, क्योंकि उनका संग सदा ही दुःख देने वाला है। उनके साथ रहने से वे स्वयं तो विपत्ति पड़ने पर भाग जाते ही हैं, किन्तु साथी को भी विपत्ति में फँसा देते हैं। उनके हृदय में बड़ी ईर्ष्या होती है, वे सदा दूसरों की बढ़ती देख कर जला करते हैं। यदि वे दूसरों की निन्दा सुनते हैं तो ऐसे प्रसन्न होते हैं मानो उन्हें कोई पड़ा हुआ खजाना मिल गया हो। वे कामी, क्रोधी, घमंडी, लालची, निर्दयी, कपटी, कुटिल और हृदय के मैले होते हैं। वे विना कारण ही दूसरों से शत्रुता कर बैठते हैं। उनके साथ जो भलाई करता है उसीके साथ वे शत्रुता करने लग जाते हैं। उनके सब काम झूठे होते हैं। वे बोली तो मीठी बोलते हैं, पर उनका भीतरी चरित्र बड़ा ही भयङ्कर होता है। वे दूसरों की स्त्री और धन हथियाने की चेष्टा में लगे रहते हैं। वे दूसरों से शत्रुता और दूसरों की बुराई करते हैं—वे पापी, मनुष्यरूपी राक्षस हैं। लोभ ही उनके जीवन का सूत्र है। पाशविक वासनाओं और पेट भरने की इच्छा ही का पूरा करना उनका सारा उद्देश्य होता है। वे नरक में जा कर दुःख पाते हैं। जब वे किसीकी बड़ाई सुनते हैं, तब इस तरह साँस लेते हैं मानो उन पर जूड़ी सवार हो गयी हो। जब वे किसी पर विपत्ति आयी देखते हैं तो ऐसे प्रसन्न होते हैं मानो वे संसार के राजा हो गये। वे स्वार्थ ही को सब कुछ समझते हैं, वे कुटुम्ब से वैरभाव रखते हैं। वे सब अवगुणों की खानि होते हैं। वे माता पिता और गुरु का कहना नहीं मानते। वे स्वयं तो

डूबते ही हैं औरों को भी ले डूबते हैं । वे मोह के कारण दूसरों से द्रोह करते हैं, उन्हें सत्संग और भगवद्भजन पसन्द नहीं है । उनकी बुद्धि ओछी होती है, वे वेद की हँसी उड़ाते, और दूसरों के धन को हड़प जाते हैं ।

Hear now the characteristics of the bad, with whom one should carefully avoid any dealings. Their company always leads to trouble, as when an ill-conditioned cow gets a gentle companion beaten like itself. The heart of the wicked is a consuming fire, which is ever rekindled at the sight of another's prosperity, but whenever they hear a neighbour abused they are as glad as if they had picked up a treasure on the road. Devoted to sensuality, choleric, arrogant and greedy; censorious, treacherous, perverse and impure; cherishing causeless animosities against every one: disliking anything that others like; false in taking, false in giving, false in great matters and false in small; speaking plausible words, but ruthless of heart, like the peacock that devours the biggest snake.

A wicked person.

Injurious to their neighbours, covetous of his wife and wealth and gloating over his misfortunes; men thus vile and abominable are ruthless incarnate fiends.

Coveting dress, coveting bed; addicted to lust and gluttony; with no fear of the realm of

Yama before their eyes ; catching their breath, as though they had got the ague when they hear of any one's advancement ; but as glad as though they had been made kings of the world, when they see their neighbour in distress, devoted to their own selfish interests, quarrelsome to their kinsfolk, dissolute, avaricious and choleric ; disobedient to father and mother, to guru and Brahman ; dragging down others into the same ruin with themselves ; infatuated workers of other's ill ; taking no pleasure in the company of the good or in discourse about Hari ; oceans of immorality, dull of understanding, lascivious, revilers of the Vedas, masterful with other men's goods, special torment of the Brahmans and the gods, with deceit and treachery in their heart, though outwardly fair seeming.

दुष्ट वर्णन ।

जो बिनु काज दाहिने बायें ॥
परहित हानि लाभ जिन केरे । उजरे हर्ष विषाद बसेरे ॥
हरि हर यश राकेश राहु से । पर अकाज भट सहसबाहु से ॥
जे परदोष लखहिं सहसाखी । परहित घृत जिनके मन माखी ॥
तेज कृशानु रोष महिषेशा । अघ अवगुण धन धनी धनेशा ॥
उदय केतु सम हित सब ही के । कुम्भकरण सम सोवत नीके ॥
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं । जिमि हिम उपल कृषीदलि गरहीं ॥
बन्दौं खल जस शेष सरोषा । सहस बदन बरणैं परदोषा ॥
पुनि बन्दौं पृथुराज समाना । पर अघ सुनैं सहस दस काना ॥
बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥

वचन बज्र जेहि सदा पियारा । सहस नयन परदोष निहारा ॥

दुष्ट लोग अकारण ही अहित करने लग जाते हैं । वे लोग दूसरों की हानि को अपना लाभ समझते हैं । दूसरों के नष्ट होने से वे प्रसन्न होते हैं और दूसरों के फलने फूलने से वे दुःखी होते हैं । भगवान् की कथा को वे सुन नहीं सकते, और दूसरों का अहित करने के लिये उनमें अपूर्व उत्साह आ जाता है । वे दूसरों के दोषों को बड़ी बारीकी और ध्यान से देखते हैं तथा दूसरों का बनता काम बिगाड़ने के लिये—जिस प्रकार घी को नष्ट करने के लिये मक्खी उसमें गिर पड़ती है उसी प्रकार वे उतारू हो जाते हैं । वे शेषजी के समान क्रोधी होते हैं, और जिस प्रकार शेषजी सहस्र मुखों से भगवान् का नाम लेते हैं उसी प्रकार वे निरन्तर और नाना प्रकार से दूसरों की बुराई किया करते हैं । वे पृथु की तरह बड़े चाव से दूसरों की बुराई सुनते हैं । जैसे इन्द्र का राजमद प्यारा है वैसे ही इन्हें सुरामद प्यारा है । जिस प्रकार इन्द्र को बज्र चलाना प्रिय है उसी प्रकार उन्हें कठोर वचन कहना प्रिय है और उन्हींकी तरह वे हज़ार आँखों से (हज़ारों तरह से) दूसरों के दोष को देखते हैं ।

The nature of the wicked.

(I would propitiate those wretches) who without cause delight to vex the righteous, with whom a neighbour's loss is gain, who rejoice in desolation and weep over prosperity (of the other's), who are as an eclipse to the full moon glory of Hari and Har; who become as giants with a thousand arms to works another's woe, who have

a thousand eyes to detect a neighbour's fault, but like flies on *ghi* settle on his good points only to spoil them ; if they can do any injury, as ready to sacrifice themselves as hail stones, that melt after destroying a crop; spiteful as the great serpent with a thousand tongues and like Prithuraj, with a thousand ears, to tell and hear of other's faults; like the thousand eyed Indra, too, ever delighting in much strong drink and in voice of thunder.

दुष्ट गुरु । हरै शिष्य धन शोक न हरई । सो गुरु घोर नरक महँ परई ॥

जो गुरु चेले से धन तो ले लेता है किन्तु उसका दुःख (हृदय का अन्धकार और अशान्ति) नष्ट नहीं करता वह नरक में पड़ता है ।

A wicked teacher. A teacher who takes his pupils' money, but does not rid him of his doubts faults into an awful abyss of hell.

दुष्ट मनुष्य । बाढ़े बहु खल चोर जुआरी । जे लम्पट परधन परनारी ॥
मानहिं मात पिता नहिं देवा । साधुन सों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी । ते निशिचर सम जानहु प्रानी ॥

जो दुष्ट, चोर, जुआरी, लोभी और पराई स्त्रियों को बुरी दृष्टि से देखने वाले हैं, जो माता पिता या देवता को नहीं मानते, जो साधुओं से सेवा करवाते हैं, वे सब (ऐसे आचरण वाले) मनुष्य (साक्षात) राक्षस हैं ।

The wicked person. The wicked, thieves and gamblers, and those who covet their neighbour's wife or goods, those

who honour neither father nor mother nor the gods, and those who exact service of better men than themselves, resemble demons.

बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ॥ दुष्ट का संग ।

हे तात ! ईश्वर दुष्ट का संग कभी न करावे, चाहे इसके बदले नरक ही में क्यों न रहना पड़े, दुष्टों के संग से नरक भी अच्छा है ।

God keep us from evil communications; t'were better, my son, to live in hell. Evil communications.

दुष्ट उदय जग आरति हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥ दुष्ट की बढ़ती ।

जिस प्रकार केतु नक्षत्र संसार में विपत्ति डालने के लिये उत्पन्न होता है उसी प्रकार दुष्ट दूसरों को दुःख देने के लिये उत्पन्न होते हैं ।

The rising of the wicked is as much a cause of calamity to world as that of the famous planet Ketu (comet) is known to be. The wicked and his rise in the world.

कवि कोविद गावहिं अस नीती । खल सम कलह नहीं भल प्रीती ॥ दुष्टों की मित्रता ।

विद्वानों का मत है कि दुष्टों की मित्रता और शत्रुता दोनों दुःख देने वाली हैं ।

The sages say that the friendship as well as enmity of the wicked is dangerous. The friendship or enmity of the wicked.

वायस पालिय अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥ दुष्टों का स्वभाव नहीं बदला जा सकता।

चाहें जितने प्रेम से तुम कौए को खीर खिलाया करो पर वह कभी मांस खाना नहीं छोड़ सकता ।

" सूर तजै अपनी गति को...पर दुष्ट तजै नाहिं दुष्टपने को ।"

A bad nature can't be altered.

However carefully you may bring up a crow, it will still be a crow and a thief.

दुष्ट भी कभी कभी भलाई कर बैठते हैं।

खलहु करहिं भल पाय सुसंगू। मिटहिं न मलिन स्वभाव अभंगू॥
लखि सुवेष जग वंचक जेऊ। वेष प्रताप पूजियत तेऊ॥
उघरहिं अन्त न होय निबाहू।

दुष्ट भी सत्संगति के प्रभाव से भलाई कर बैठते हैं पर उनका बुरा स्वभाव नहीं मिटता। इस संसार में ठग लोग भी अच्छे वेष में रहने के कारण पूजे जाते हैं पर जब पोल खुल जाती है तब उनकी दाल नहीं गलती।

The wicked may by mistake do good to others.

If the bad through intercourse with the good do good, their inherent wickedness is not effaced. An imposter of fair outward show may be honoured on account of his garb, but in the end he is exposed and does not succeed.

असीम लालच।

जिमि चह कुशल अकारण कोही। सुख सम्पदा चहैं शिवद्रोही॥
लोभी लोलुप कीरति चहहीं। अकलंकता कि कामी लहहीं॥
हरिपद विमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालच नरनाहा॥

जैसे वह मनुष्य जो बिना किसी कारण के क्रुद्ध हो जाता है, कभी कुशलपूर्वक नहीं रह सकता, या जैसे महादेवजी से द्रोह रखने वाला मनुष्य सुख और सम्पत्ति को नहीं पा सकता, अथवा जैसे लोभी या लालची कीर्त्ति प्राप्त नहीं कर सकता या जिस प्रकार कामी पुरुष निष्कलंक नहीं रह सकता अथवा जिस प्रकार भगवान् से विमुख रहने वाला

अवि मोक्ष नहीं पा सकता उसी प्रकार तुम्हारा (अर्थात् असीम) लालच कभी पूरा नहीं हो सकता।

As a man who is passionate without cause and yet wishes for peace of mind, as a reviber of Shiva who wishes for happiness and prosperity, as a greedy and a covetous man who wishes for fair fame, and as a gallant who would have no scandal, as an enemy of god who wishes to be saved, such is your desire. Vain desires.

टेढ़ जानि शंका सब काहू। वक्र चन्द्रमा ग्रसै न राहू॥ दुर्जन पुरुष।

जो मनुष्य टेढ़े (दुर्जन) होते हैं उनसे सभी डरते हैं। भोले भाले आदमी ही बहुधा इस संसार में सताये जाते हैं। राहु केवल पूर्ण चन्द्र ही को ग्रस सकता है, अर्थात् ग्रहण केवल पूर्णिमा के चन्द्रमा ही को लग सकता है। किन्तु राहु भी टेढ़े (वक्र) चन्द्रमा को ग्रस लेने का साहस नहीं कर सकता।

It is something a great mistake to be good and upright, for every man is afraid of the crooked, in the same way as Rahu does not attack the crescent moon. The wicked persons.

राग रोष ईर्ष्या मद मोह। जनि स्वप्ने इनके वश होह॥ दुर्गुण।

स्वप्न में भी विषय, क्रोध, द्वेष, अहंकार और मोह के वशीभूत मत हो।

Never give way even in dream to lust or passion, or envy, or pride, or delusion. Evils.

दुराशाएँ। सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन शुभ गति व्यभिचारी॥
लोभी यश चह चारु गुमानी। नभ दुहि दूध चहत जे प्रानी॥

यदि सेवक सुख की आशा करे, भिखमंगा आदर पाने की इच्छा करे, शौकीन और बुरी लतों में पड़ा आदमी धनी होने की इच्छा करे, व्यभिचारी अच्छी गति पाना चाहे, तो समझ लो कि ये व्यक्ति आकाश से दूध दुहने ऐसी असम्भव कामना कर रहे हैं।

Vain desires.

A servant who expects to take his ease, a beggar who expects honour, a spendthrift who hopes for wealth, a profligate who hopes for heaven, or an avaricious man who expects renown, these are four dreamers, men who would expect milk from milking the air.

दुर्वासनाओं के शस्त्र।

लोभ की इच्छा दम्भ बल, काम के केवल नारि।
क्रोध पुरुष के वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि॥

मुनि जन सोच विचार कर कहते हैं कि लोभ का बल इच्छा और दम्भ है, काम का बल स्त्री है तथा क्रोध का बल वचन है।

Things that enhance bad desires.

The weapons of greed are desire and pride of love, nothing but woman, while angers weapon is harsh speech, so thoughtful sages have declared.

तीन खल।

तात तीन अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञानधाम मन, करहिं निमिष महँ क्षोभ॥

हे तात! तीन वासनाएँ बहुत शक्तिशाली और बलवान् हैं।

हैं काम, क्रोध और लोभ हैं। ये तीनों बड़े बड़े ज्ञानी महर्षियों के मन में भी क्षण में क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं।

Brother, there are three evils of surpassing strength, love, anger and greed; in an instant they upset the soul of the wisest philosopher. Three evils.

आरत काह न करहिं कुकरमू। दुःखी।

जो लोग दुःखी हैं वे कौन सा पाप नहीं करते ?

Is there anything so vile that a man in distress will not do ? Sorrowful.

रहत न आरत के चित चेतू। दुःखी

दुःखी मनुष्य बदहवास हो जाते हैं। अर्थात् उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता।

When a man is in distress he cannot reason. Sorrowful.

पर घर घालत लाज न पीरा। बाँझ कि जान प्रसव की पीरा॥ जिसके ऊपर विपत्ति नहीं पड़ी वह दुःख का अनुभव नहीं कर सकता।

(जिन लोगों के घर नहीं है) उनको दूसरे का घर नष्ट करते क्या कष्ट हो सकता है। न तो उन्हें घर के आनन्द ही का अनुभव है और न घर नष्ट होने के शोक ही का। भला बाँझ स्त्री लड़के पैदा होते समय के दुःख को क्या जाने ?

जाके पैर न फटी बिंवाई। सो क्या जाने पीर पराई॥

In destroying another's home an ascetic has neither shame nor compunction, for what does a barren woman know of the pangs of childbirth. Unexperienced men do wrong light heartedly

दरिद्रता । नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ।

संसार में दरिद्रता के बराबर और दुःख नहीं है ।

The poverty. There is no pain in the world as great as the poverty.

दो काम एक साथ नहीं हो सकते । दुइ कि होहिं एक समय भुआलू । हँसब ठठाइ फुलाउब गालू ॥

मनुष्य एक समय में दो विरुद्ध काम नहीं कर सकता । यदि कोई चाहे कि एक ही समय में वह ठठा कर हँसे भी और मुँह फुला कर कुढ़ कर बैठ भी जाय, तो दोनों का एक साथ होना असम्भव है ।

Is thing cannot be done simultaneously. Is it possible, sire, to do two things at once? Could one laugh and jest and at the same time mourn?

दैवेच्छा । राम कीन्ह चाहैं सो होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥

जो कुछ दैवेच्छा होती है वही होता है । दैवेच्छा टल नहीं सकती ।

The will of God. What Rama wills to have done is done, and there is no one who can alter it.

दैव गति । बिधि गति बाम सदा सब काहू ।

विधाता की गति कुछ ऐसी विचित्र है कि वह बहुधा (सदा विपत्तिकाल में) सब के विपरीत ही होती है ।

The will of God. God's hand is ever against all (so it seems in distress).

मित्र । जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिनहिं बिलोकत पातक भारी ॥
निजदुख गिरिसम रजकरि जाना । मित्र के दुख रज मेरु समाना ॥

जिनके अस मति सहज न आई। ते शठ हठ कत करत मिताई॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा। गुण प्रगटै अवगुणहि दुरावा॥
देत लेत मन शंक न धरहीं। बल अनुमान सदा हित करहीं॥
विपति काल कर शत गुण नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुण एहा॥

जो मनुष्य अपने मित्र के दुःख से दुःखी नहीं होता, उसके देखने ही से पाप होता है। (सच्चे मित्र) अपने बड़े से भी बड़े दुःख को छोटा ही समझते हैं पर अपने मित्र के छोटे दुःख को भी अपने ऊपर पड़ी हुई बड़ी विपत्ति के समान समझते हैं। जिनके हृदय में स्वभाव ही से ऐसे विचार और भाव नहीं हैं वे मूर्ख व्यर्थ ही क्यों मित्रता करते हैं। जो (अपने मित्र को) बुरे रास्ते से हटा कर अच्छे रास्ते पर लाते हैं, जो (दूसरों को अपने मित्र के) गुण ही सुनाते हैं और उसकी बुराई छिपा लेते हैं, जो रुपये पैसे के लेन देन में संकोच नहीं करते और जो यथाशक्ति उसीकी भलाई करते हैं वे ही सच्चे मित्र हैं। (वैसे तो वे स्नेह कम दिखलाते हैं पर मित्र पर विपत्ति पड़ने पर) वे सौ गुना स्नेह जताते हैं, ये ही सब सच्चे मित्रों के गुण हैं।

They, who are not distressed at the sight of a friend's distress, are guilty of grievous sin. They who do not think it the most natural thing possible to regard as a mere grain of sand their own mountain like troubles, while a friend's trouble, though really no bigger than a grain of sand, seems to them as weighty as mount Meru; such men are churls, upon whom it is useless to press Friend.

friendship. Is restrain from evil paths and to direct in the path of virtue; to publish all good qualities and conceal the bad, to give and take without any distrust of mind, to be always ready to assist with all one's power, and in time of misfortune to be a hundred times more affectionate than ever; such the scriptures declare to be the properties of a true friend.

मित्र और स्वार्थ।

स्वारथ मीत सकल जग माहीं। स्वप्नेहु प्रभु परमारथ नाहीं॥

इस संसार के सभी मित्र स्वार्थरत हैं, संसारी मित्र स्वप्न में भी परमार्थ करना नहीं जानते।

The worldly friend and his motives.

Every friend in the world has his own object in view; no one, sire, ever dreams of the highest object.

कपटी मित्र।

आगे कह मृदु वचन सुनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई॥
जा कर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरे भलाई॥

मित्र मित्र सों प्रीति कर, हृदय आन मुख आन।
जाके मन वच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान॥

जो पहिले तो मीठे बोल बोलते हैं, किन्तु पीछे से मन में मित्र का अहित सोचते हैं और हृदय में कुटिलता रखते हैं, जिसका मन साँप की गति के समान है, सो कुमित्र है, उससे सम्बन्ध तोड़ने ही में हित है।

जो मित्र मित्र से प्रीति कर मुँह से तो कुछ कहता है और हृदय में और कुछ रखता है, जिसके हृदय और वचनों में प्रेम नहीं है वह कुमित्र है।

But one who speaks you fairly at your face, but behind your back is an enemy in the viciousness of his soul, whose mind, brother, is as tortuous as the movements of the snake, such a man is a bad friend, whom it is well to let alone. False friend.

समय फिरे रिपु होहिं पिरीते । सुहृद् और समय ।

जब मनुष्य के दिन उलट जाते हैं अर्थात् जब उसके बुरे दिन आ जाते हैं तब वे लोग भी जो सुख के दिनों में उसके मित्र और सुहृद् थे, उसके शत्रु हो जाते हैं ।

With the change of time the friends turn foes. Friend and time.

धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपति काल परखिये चारी ॥ आपत्ति-काल के साथी ।

विपत्तिकाल में मनुष्य के धैर्य, उसकी धर्मदृढ़ता, उसके मित्रों की मित्रता की सचाई और स्त्री के प्रेम की परीक्षा हो जाती है ।

विपति बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय ।
इष्ट मित्र अरु बन्धु जन, जानि परै सब कोय ॥

Courage, virtue, a friend and a woman (wife) are four things that are tried in time of adversity. Friends faithful in adversity.

तुलसी देख सुवेख, भूलै मूढ़ न चतुर नर । कपटी ।
सुन्दर केकी पेख, वचन सुधा सम अशन अहि ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि मनुष्य का सुन्दर बनावटी वेष देख कर मूर्ख लोग ही भुलावे में आ सकते हैं । सुन्दर वेष सदा ही साधुता का चिह्न नहीं है । जैसे मोर देखने में

तो बहुत सुन्दर है, और मीठा बोल भी बोलता है पर उसका भोजन साँप है ।

Hypocrites.

Says Tulsi, fools are deceived by fair appearance but no wise men, though a peacock is fair to look upon and its voice is pleasant, yet it devours snake.

बिरोध मानने वाले सुहृदों के यहाँ भी न जाना चाहिये ।

यद्यपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइय बिनु बोले न संदेहा ॥
तदपि विरोध मान जहँ कोई । तहाँ गये कल्याण न होई ॥

यद्यपि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के यहाँ विना बुलाये ही चला जाय किन्तु यदि वहाँ अपने से, कोई विरोध भाव मानै तो वहाँ जाना कल्याणकर नहीं है ।

To visit a place where one is received in difficulty.

One may go, no doubt without an invitation to the house of a friend, or master, or father or confessor, but no good can result from going where an enemy is present.

प्रेम की रीति ।

जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति की रीति भल ।
बिलग होय रस जाय, कपट खटाई परत हीं ॥

जल दूध से प्रेम विवश मिल जाता है और फिर दूध ही के भाव बिक भी जाता है । प्रेम की यह कैसी उदार और अच्छी रीति है । किन्तु यदि प्रेम में कपट आ पड़े तो मिले हुए हृदय ऐसे फट जाते हैं जैसे खटाई के पड़ने से दूध और जल ।

The way of love.

Water and milk mixed together are both sold as milk, but see how like the union is to that of lovers, the introduction of a drop of acid, or of a lie, at once causes a separation.

प्रीति कि रीति न जाय बखानी। प्रीति का नियम।

प्रीति का नियम कुछ ऐसा विचित्र है कि उसका वर्णन एकाएक नहीं किया जा सकता।

The ways of love cannot be explained. The ways of love.

रही न लाज प्रीति उर छाई। प्रीति और लज्जा।

जब हृदय में प्रेम समा जाता है तब संकोच (यहाँ लज्जा का यही अर्थ है) चला जाता है।

Wherever love prevails, ettiquette cannot find a room. Love and shyness.

प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहिं। प्रीति और शत्रुता के पात्र।
जो मृगपति वध मेडकिहिं, भलो कहै को ताहि॥

बराबर वालों ही से वैर या प्रेम करे, ऐसी ही नीति की सम्मति है। यदि सिंह मेड़की का शिकार करने लगे तो उसकी बहादुरी की कौन बड़ाई करेगा ?

Take your friends and enemies from among your equals is a good and sound maxims. If a lion kills a frog, who thinks it a fine deed ? Men fit for friendship and enmity.

जनि सनेह वश डरपसि भोरे। स्नेह और भय।

स्नेह के कारण अपने स्नेही की ओर से मत डरो। बहुधा ऐसा होता है कि जिससे हम अधिक स्नेह करते हैं उसके बाहर चले जाने पर या उसके तनिक भी बीमार पड़ने पर हमें उसके अमंगल होने का भय होने लगता है। यह केवल अत्यन्त स्नेह का परिणाममात्र है।

Love and fear.

Do not in your affection give way to cause of alarm.

अति प्रेम का परिणाम।

तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू। यश जग जाय होय अपवादू॥

मोह के वशीभूत हो कर प्रिय लोगों से (सीमा के बाहर) प्रेम करने से प्रेम करने वाले का यश संसार से लुप्त हो जाता है और उसकी बदनामी होती है।

Consequences of love.

From excessive attachment to any beloved object, honour is lost and disgrace incurred.

कठोर वचन।

कोटि कुलिश सम वचन तुम्हारा। वृथा धरहु धनु बाण कुठारा॥

जिस व्यक्ति के वचन कठोर हैं, उसको (भले) मनुष्यों के जीतने के लिये शस्त्रों का उपयोग करना ही व्यर्थ है। अर्थात् कठोर वचन अस्त्रों से भी अधिक दुःखदायी हैं।

The hard words.

Your speech is as awful as a million thunderbolts, therefore your axe and bow and arrows are unnecessary.

क्रोध।

क्रोध पाप कर मूल।
जेहि वश जन अनुचित करहिं, चलहिं विश्व प्रतिकूल॥

क्रोध ही पाप की जड़ है, क्योंकि क्रोध के आवेश में आ कर मनुष्य सांसारिक और दैवी नियमों के विरुद्ध भी काम कर बैठता है और इन नियमों ही का तोड़ना पाप (अपराध) है।

Passion.

Passion is the root of sin; those who are under its influence do unseemly things and set themselves against every one.

लक्ष्मण देखहु काम अनीका। रहहिं धीर तिनके जगलीका॥ काम का
इहिके एक परम बल नारी। तेहिते उबर सुभट सोइ भारी॥ बल।

हे लक्ष्मण! काम की सेना देखो। जो लोग इसके आगे भी धीरज नहीं छोड़ते वे ही संसार में धैर्यवान् समझे जाते हैं। इस (कामदेव) की सबसे बड़ी शक्ति स्त्री है, जो उसे जय कर ले, अर्थात् जो उसके वश में न हो जाय वही सच्चा योद्धा है।

O Lakshman, they who can see love's battle array and stand firm, they are men of mark in the world, His greatest strength lies in woman; any one who can escape her is a mighty champion indeed. The strength of love.

मम माया सम्भव संसारा। जीव चराचर विविध प्रकारा॥ मनुष्य का
सब मम प्रिय सब मम उपजाये। सबतें अधिक मनुज मोहिं भाये॥ महत्त्व।
तेहिमें द्विज, द्विज में श्रुतिधारी। तिनमहँ निगम नीति अनुसारी॥
तेहिते पुनि मोहिंप्रियनिजदासा। जेहि गति मोहिं न दूसरिआसा॥
तिनमहँ प्रिय विरक्त मुनिज्ञानी। ज्ञानिहु तें अतिप्रिय विज्ञानी॥
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहिंपाहीं। मोहिं सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं॥
भक्तिहीन विरंचि कि न होई। सब जीवन सम प्रिय मोहिं सोई॥
भक्तिवन्त अति नीचौ प्राणी। मोहिं परमप्रिय यह मम वाणी॥

भगवान् रामचन्द्रजी कहते हैं—यह संसार मेरी माया ही का फल है। इस संसार में जितने जीव हैं सब मैंने ही उत्पन्न किये हैं और सभी मुझे प्यारे हैं। किन्तु सब जीवों में मनुष्य ही मुझे अधिक प्रिय है। मनुष्य में भी द्विजाति, इनमें भी वेदपाठी, और वेदपाठियों में भी सदाचारी मुझे

पसन्द हैं। इससे भी अधिक प्यारे मुझे अपने सेवक हैं जिनको मेरा ही पूर्ण भरोसा है। उनमें भी मुझे वह व्यक्ति अधिक प्रिय है जो ज्ञानी और विरक्त हो, किन्तु ज्ञानी से भी अधिक प्रिय मुझे विज्ञानी (तत्त्ववेत्ता) है। मैं तुमसे फिर सच सच कहता हूँ कि भक्त के समान मुझे और कोई प्यारा नहीं है। यदि ब्रह्मा भी भक्त न हों तो उन्हें भी मैं औरों की तरह समझूँ। भक्त चाहे वह नीच जाति ही का क्यों न हो, मुझे प्रिय है—मेरा यही कथन है।

The importance of the man in the creation.

"The world is the product of my delusive power," says Rama, "with all its varieties of life, both moving and motionless. I love them all, for all are my creatures; but man is the creature that delights me most; of men, Brahmans; of Brahmans, those who study the Vedas; of those such as follow the precepts of the sacred texts; of then again the devotees, are my favourites, and yet more the wise; of the wise I love best the spiritually wise; and those who regard me as the only resort. Again and again I tell you of the truth there are none so dear to me as my own devotees. If Brahma himself had no faith in me, he would not be dearer to me than any other creature, while the meanest creature that breathes, if possessed of faith, is as dear to me as my own soul; this is my doctrine."

मनुष्य शरीर का महत्त्व।

नर समान नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर पावत जेही॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग नसैनी। ज्ञान विराग भक्ति सुख दैनी॥

मनुष्य शरीर के समान और कोई शरीर नहीं है क्योंकि इसीके द्वारा नरक, स्वर्ग और मोक्ष पाना सम्भव है। इसीसे ज्ञान वैराग्य और भक्ति तथा सुख प्राप्त होता है।

The human body is the most excellent of all and the desire of every living creature, whether moving or motionless. It is the ladder that might be used to bad to hell, heaven or the final emancipation and is bestower of the blessing of the wisdom and faith.

Importance of the human body.

मोह न अन्ध कीन केहि केही। को जग काम नचाव न जेही॥
तृष्णा केहि न कीन बौराहा। केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा॥

मनुष्यों पर विकारों का प्रभाव।

ज्ञानी तापस शूर कवि, कोबिद गुण आगार।
केहिके लोभ विडम्बना, कीन्ह न इहि संसार॥
श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि।
मृगनयनी के नयन शर, को अस लाग न जाहि॥

गुण कृत सन्निपात नहिं केही। को न मान मद व्यापेहु जेही॥
यौवन ज्वर न काहि बलकावा। ममता केहिकर यश न नशावा॥
मत्सर काहि कलंक न लावा। काहि न शोक समीर डुलावा॥
चिन्ता साँपिनि काहि न खाया। को जग जाहि न व्यापी माया॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा। जेहि न लागु घुन को अस धीरा॥
सुत वित लोक ईषणा तीनी। केहिकी मति यहि कृत न मलीनी॥
यह सब माया कर परिवारा। प्रबल अमित को बरणै पारा॥
शिव चतुरानन जाहि डराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं॥

संसार में मोह ने किसके ज्ञानचक्षु बेकाम नहीं कर दिये, काम ने किसको अपने वश नहीं किया। लोभ ने किसको

पागल नहीं बना दिया ? ज्ञानी, तपस्वी, वीर, कवि, विद्वान् और गुणी ऐसा कौन है जिसकी विडम्बना लोभ ने न की हो ? धन के नशे ने किसको टेढ़ा नहीं कर दिया, अधिकार और ऐश्वर्य ने किसके कान (उपदेश की ओर से) बहिरे नहीं कर दिये और स्त्री के नयनों ने किसको अपना निशाना नहीं बनाया ? अपने गुणों के अभिमान के कारण कौन अनाप शनाप नहीं बकने लग जाता ; जवानी के ज्वर ने किसको जोशीला नहीं बना दिया, ममता ने किसके यश का नाश नहीं किया, अभिमान ने किसको कलंकभाजन नहीं बनाया, किसको शोक ने विचलित नहीं कर दिया, चिन्तारूपी नागिन ने (डंस कर) किसके शरीर को नहीं खा डाला और संसार में ऐसा कौन है जो माया के वशीभूत नहीं हुआ ? कौन ऐसा धैर्यधारी है जिसकी शरीररूपी लकड़ी में मनोरथ (और आशा) रूपी घुनों ने लग कर उसको जर्जरित नहीं कर दिया । कौन ऐसा है जिसकी बुद्धि को पुत्र, धन और लोक की इच्छा ने मलिन न कर दिया हो ? यह सारा संसार माया का है—ऐसा कौन है जो इसका वर्णन कर सकै—जिस माया को स्वयं ब्रह्मा और शिवजी भी डराते हैं, उसका वर्णन भला कौन ऐसा बलवान् है, जो कर सकै ?

The influence of the frailties of the human nature on man.

Is there any whom delusion has not blinded, or whom love has not made a puppet of, whom desire has not maddened, or whose heart choler has not inflamed ?

Is there any philosopher, ascetic, or hero in the world, or any learned or accomplished bard, whom greed has not beguiled; whom the pride of wealth has not rendered wanton; whom power has not made deaf; or whom the glance of beauty has not smitten as an arrow?

Is there any whom success has not paralysed; who has effectually discarded vanity and pride; whom the fever of youth has not overcome; whose glory has not been ruined by self-conceit; whom envy has not besmirched; whom the blast of sorrow has not shaken; whom the serpent of care has not bitten; or whom the delusion has not effected? Is there any so well-seasoned of frame that he has not been attacked by desire, as a plank by the weevil? The desire of family, of wealth and of renown is a three-fold temptation; whose soul has it not sullied? These all are Maya's suite; who can describe in full her illimitable might? Since Siva and Brahma stand in awe of her, why speak of other creatures?

धर्म सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छुछूँदर केरी ॥ मन की अनिश्चित अवस्था।

जिस मनुष्य का मन धर्म और प्रेम के बीच में पड़ जाता है वह बड़े असमंजस में जा पड़ता है। एक ओर तो कर्त्तव्य और धर्म अपनी ओर खींचते हैं दूसरी ओर प्रेम ठीक विपरीत रास्ता पकड़ने को कहता है। मनुष्य दोनों निबाहना

चाहता है, और परिणाम यह होता है कि वह शीघ्र ही कोई उपाय निर्धारित नहीं कर सकता ।

An unsettled state of mind.

Duty and affection both laid seige to her soul; her dilemma was like that of a snake with a musk rat. If it swallows the rat, it goes blind; if it leaves it dies; such is the popular belief.

माया ।

योग वियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥
जन्म मरण जहँ लगि जग जालू । संपति विपति कर्म अरु कालू ॥
धरणि धाम धन पुर परिवारू । स्वर्ग नरक जहँ लगि व्यवहारू ॥
देखिय सुनिय गुणिय मनमाहीं । मायाकृत परमारथ नाहीं ॥

स्वप्ने होय भिखारि नृप, रंक नाकपति होय ।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोय ॥

मिलन और वियोग, सुख या दुःख भोगना, भलाई करना या बुराई करना या उदासीन रहना ये सब भ्रम (माया) के जाल हैं । जन्म, मृत्यु, संसार के सब जाल (जैसे) सम्पन्न होना और नष्ट होना, भाग्य और मृत्यु, ज़मीन जायदाद, धन, नगर, गृहस्थी, स्वर्ग, नरक या और जितनी ऐसी (सांसारिक) वस्तु हैं वे सब माया (भ्रम) हैं और उनमें सत्य का लेश भी नहीं है ।

सपने में राजा भिखारी हो जाता है और भिखारी इन्द्र हो जाता है, किन्तु जहाँ नींद टूटी तहाँ फिर जैसे के तैसे (हमें चाहिये कि) संसार को ऐसा ही समझें ।

Illusion.

Union and separation, pleasure, good and evil, friendship, and enmity are snares of delusion, birth and death, are the entanglements of the

world; prosperity and adversity, fortune and destiny, earth, home, city and family, heaven, hell and all human affairs; all that you can see, or hear, or imagine in your mind, all is delusive and unreal.

In a dream a king becomes a beggar, and beggar the lord of heaven, but on waking the one is no loser nor the other a gainer; this is the way in which you should regard the world.

गो गोचर जग जहँ मन जाई। सो सब माया जानहु भाई॥ माया।

जो वस्तु केवल इन्द्रियों के द्वारा जानी जा सके वही माया है।

The senses and the objects of the senses, as far as the mind can reach, are all a delusion, brother, understand that. Illusion.

तेहि कर भेद सुनहु तुम सोऊ। विद्या अपर अविद्या दोऊ॥ माया के
एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा। जा वश जीव परा भवकूपा॥ भेद।
एक रचै जग गुण वश जाके। प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताके॥

माया के दो भेद हैं। एक विद्या और दूसरी अविद्या। अविद्या दुःखदायिनी है क्योंकि उसीके कारण मनुष्य संसार-बन्धन में आ पड़ा है। विद्या ईश्वर की प्रेरणा से संसार की रचना करती है। इसमें स्वयं अपना बल नहीं है किन्तु, ईश्वरप्रदत्त शक्ति ही से वह सब करती है।

Now learn its (delusion) divisions:—They are two, *viz.*, knowledge and ignorance; the one utterly bad and calamitous, which forces the Kinds of Illusions.

principle of life down into the pit of transmigration; the other, the power by virtue of which the world is created, being sent by god and having no strength of its own.

मोह । जेहि न मोह अस को जग जाया ॥

संसार में ऐसा कौन उत्पन्न हुआ है जिसमें मोह न हो ।

The deception. The deception of this world is so strong that there is no man living who can resist it.

मोह । मोह मूल बहु शूलप्रद, त्यागहु तुम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान ॥

तुम्हारे हृदय में जो अभिमान है वह मोह की जड़ है और बहुत कष्टदायक है, अतएव उसे छोड़ दो और दया के समुद्र भगवान् की शरण में जाओ ।

Arrogance. Arrogance is a root fruitful of many thorns; abandon violence and pride, and worship Rama, the prince of the Raghu race, the ocean of compassion, the Lord God.

मोह माया । सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ।
अस विचारि मन माहिं, भजिय महा-माया-पतिहि ॥

देवता, मनुष्य और मुनि इनमें कोई ऐसा नहीं है जिनमें मोह या माया का लवलेश न हो, ऐसा समझ कर (कि इनमें तो स्वयं मोह माया है इनको न भज कर) महामायापति भगवान् की शरण जाओ ।

There is neither god, nor saint whom unreality has not infatuated. Reflect upon this and worship the great master of the unreal. The unreality of the universe.

वृथा मरहु जनि गाल बजाई। मन मोदक नहिं भूख बुताई॥ मिथ्या विचार।

जो लोग शेखचिल्ली की तरह आकाश में महल बनाया करते हैं, उनको कोई सच्चा लाभ नहीं होता वे दुराशा और झूठे विश्वास के धोखे में पड़े रहते हैं। जिस प्रकार मन ही मन लड्डू का भोजन करने वालों की भूख नहीं मिट सकती उसी प्रकार बक बक करने वाले व्यक्ति की बकवाद कार्य में परिणत नहीं हो सकती।

Why thus scoff and throw away your lives to no purpose, imagination stop no man's hunger. Vain thoughts.

सो तनु राखि करब मैं काहा। जेहिं न प्रेम प्रण मोर निबाहा॥ निरर्थक शरीर।

जिस जीवन में प्रेम की प्रतिज्ञा नहीं निबाही, उसका धारण करना व्यर्थ है।

Why should I cherish a body, that has failed to fulfil my love's engagement. Useless body.

ग्रह गृहीत पुनि वात वश, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाई वारुणी, कहिय कौन उपचार॥ भयंकर उपचार।

जिस मनुष्य पर ग्रहों की कुदृष्टि पड़ी हो, जिसे सन्निपात भी हो गया हो और साथ ही बीछी ने भी जिसे डंक मारा हो, यदि उसे शराब पिलाई जाय तो ऐसी औषधि की बलिहारी है।

Stricken as I am by fate, overcome by organic disease, and then stung by a scorpion, Dangerous treatment.

you give me wine to drink, tell me, tell me what kind of treatment is this ?

अवज्ञा । अति संघर्षण करे जो कोई । अनल प्रगट चन्दन महँ होई ॥
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये । उपज क्रोध ज्ञानिहु के हिये ॥

जिस प्रकार बहुत ज्यादा रगड़ने से चन्दन ऐसी शीतल वस्तु में भी अग्नि उत्पन्न हो जाती है उसी प्रकार बार बार आज्ञा का उल्लंघन करने से ज्ञानी के हृदय में भी क्रोध हो आता है ।

Disrespect. Too much of disrespect creates resentment even in the hearts of the philosopher, just as excessive amount of friction will strike fire even out of Sandal-wood.

अपयश । सम्भावित कहँ अपयश लाहू । मरण कोटि सम दारुण दाहू ॥

समर्थ (यशस्वी) को बन्दना भी उसके लिये कोटि मृत्यु के समान दुःख देने वाली है ।

असम्भावित का तिरस्कार तो मरण से बढ़ कर कहा गया है । जिया तो क्या फिर जिया लोग जब कहते कि यह नर तो बेहया है ।

Disgrace. Disgrace to a man of honour is pain as grievous as a million deaths.

अभिमानी । विषयी जीव पाय प्रभुताई । मूढ़ मोह वश होहिं जनाई ॥

विषय में मग्न लोग अधिकार पा कर मोह और मूर्खता के कारण अभिमान करने लगते हैं ।

A proud person. A worldly man, who has got power, becomes mad and infatuated and so betrays himself.

यद्यपि जग दारुण दुख नाना । सबते कठिन जाति अपमाना ॥ जाति अभिमान।

यद्यपि संसार में अनेक प्रकार के एक से एक बढ़ कर भारी दुःख हैं तथापि जाति-कृत अपमान, (जाति से हुआ अपना अपमान) या अपनी जाति के (किसी पुरुष के द्वारा किये गये) अपमान के बराबर कोई दुःख नहीं है।

There are grievous pains in the world, but nothing bad as the insult of one's notion. The insult of one's notion.

रजत सीप महँ भास जिमि, यथा भानुकर वारि।
यद्पि मृषा तिहुँकाल सोइ, भ्रम न सकै कोउ टारि ॥ भ्रम।

सीप, चाँदी मालूम पड़ती है और सूर्य की किरणों में पानी का भ्रम होता है—यह केवल भ्रम है—इसमें सत्य का लेश नहीं पर इस भ्रम को कौन मिटा सकता है।

प्रसिद्ध है कि "शक की दवा हकीम लुकमान के पास भी नहीं है"।

Though false as the gleam of a polished shell, or as a mirage caused by the sun's rays yet no one, at any time past, present or future, can rid himself of the delusion. The delusion.

नाथ विषय सम मद कछु नाहीं । मुनि मन मोह करे क्षण माहीं ॥ विषय।

हे नाथ! संसार में विषय के समान और कोई नशा नहीं है। यह नशा मुनियों के मन को भी पल भर में मोह के वशीभूत कर देता है।

There is nothing, my lord, so intoxicating as pleasure, in a single moment it infatuates even the soul of a saint. Pleasure or lust.

विषयानुरागी। सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं विषय अनुरागी॥

हे पार्वती! वे लोग बड़े भाग्यहीन हैं, जो भगवान् को छोड़ कर विषय वासनाओं में फँसे रहते हैं।

Men desiring sensual pleasures. Hearken, Uma, the most miserable of men are they who abandon Hari and become attached to objects of sense.

व्यर्थ श्रम। राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा। हरिहि समर्पे बिनु सत कर्मा॥
विद्या बिनु विवेक उपजाये। श्रम फल पढ़े किये अरु पाये॥

नीति के विना राज्य के पाने, धर्म के विना धन के पाने से, सत्य कर्म करके भगवान् के प्रीत्यर्थ अर्पण न कर देने से उनके करने का श्रम व्यर्थ है। यदि विद्या पढ़ कर भी विवेक न आवे तो उस विद्या के पढ़ने का श्रम निरर्थक गया, ऐसा समझना चाहिये।

Vain labour. A kingdom without policy, wealth without religion, good works without concentration to Hari, knowledge without discretion, these all bring no fruits save trouble to the student, the doer or the possessor.

उपदेश के पात्र। धर्म नीति उपदेशिय ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही॥

धर्म और नीति के उपदेश उसे ही देना चाहिये जो यश ऐश्वर्य और सद्गति का भूखा हो।

Men worthy of being taught. Expound questions of theology to one who aims at fame, glory and high estate.

व्यर्थ उपदेश। ममता रत सन ज्ञान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी॥
क्रोधिहिं शम कामिहिं हरिकथा। ऊषर बीज बये फल यथा॥

ममतावान् को ज्ञान का, महालोभी को त्याग का, क्रोधी को शम का और कामी को भगवद्भजन करने का उपदेश देना व्यर्थ है।

To discourse devine wisdom with a man devoted to self, to speak of detachment to the covetous, to tell of Hari to a man under influence of passions or love, is all the same as sowing in the sand in hope of harvest. Tutile advice.

सरुज शरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरिभक्ति बादि जप योगा॥ व्यर्थ वस्तु।

जैसे रोगी शरीर के लिये सारे सुख भोग व्यर्थ हैं, उसी तरह विना हरिभक्ति के सारे योग और जप भी व्यर्थ हैं।

Of no use is any enjoyment to a diseased body; prayer and penance go for naught without faith in Hari. Useless things.

जग बौराय राज्य पद पाये। राजपद।

संसार में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो राजा हो कर मदान्ध न हो जाय।

All the world goes mad on getting dominion. The man getting dominion.

सुकवि कुकवि निज मति अनुसारी। नृपहिं सराहत सब नर नारी॥ राजा का
साधु सुजान सुशील नृपाला। ईश अंश भव परम कृपाला॥ शरीर।

सभी श्रेणी के कवि अपनी मति के अनुसार राजा का कीर्त्ति-गान करते हैं। क्योंकि राजा सज्जन सुशील और दयालु होता है, तथा वह ईश्वर के अंश से उत्पन्न होता है।

The men of the iron age.

Men born in this grin iron age are outwardly, as black as crows; walking in evil paths, abandoning the Vedas, embodiment of falsehood, vessels of impurity, hypocrites, professing devotion to Rama, but slaves of gold, of passion and of lust ?

संन्यासी ।

सब नृप भये योग उपहासी । जैसे बिनु विराग संन्यासी ॥

जे व्यक्ति हृदय में वैराग्य न होने पर भी संन्यास ग्रहण कर लेते हैं वे जगत् के लिये उपहास की वस्तु हो जाते हैं ।

A ridiculous hermit.

The hermit who has no religion is an object of ridicule.

कलियुगी संन्यासी ।

नारि मुई घर सम्पति नासी । मूँड़ मुड़ाय भये संन्यासी ॥

जिसकी स्त्री मर गयी और घर का धन नष्ट हो गया वह शिर घुटा आज कल संन्यासी बन जाता है ।

Modern sanyasis.

People (of low-caste) on the death of their wives or loss of their house-hold goods, shave their heads and turn religious mendicants.

काम सोच विचार कर करना चाहिये ।

अनुचित उचित काज कछु होई । समुझि करिय भल कह सब कोई ॥
सहसा कर पाछे पछताहीं । कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं ॥

अनुचित या उचित कैसा भी काम क्यों न हो यदि समझ बूझ कर किया जाय तो उसे सभी कोई अच्छा कहेंगे । जो लोग एकाएक विना सोचे समझे कोई काम कर बैठते हैं और पीछे पछताते हैं, उन्हें वेद और बुद्धिमान् लोग मूर्ख कहते हैं ।

Any business, whether right or wrong, should be done deliberately, so every one agrees. They who act rashly and afterwards repent, the Vedas say they are anything but wise.

Things should be done after due deliberation.

नवहि विरोध नहीं कल्याणा। शस्त्री, मर्मी, प्रभु, शठ, धनी। वैद्य, बन्दि, कवि, मानसगुनी॥

कितनों से विरोध न करे।

हथियारबन्द, अपनी गुप्त बात जानने वाले, मालिक, बदमाश, अमीर, वैद्य, बन्दि, कवि और पण्डित इन नौ लोगों से विरोध करने में भलाई नहीं है।

तुलसीदासजी यहाँ कई लोगों को छोड़ गये हैं। गिरिधरदासजी की कुण्डलिया इस विषय में उत्तम है।

साईं ये न विरुद्धिये कवि पण्डित गुरु यार।
बेटा बनिता पौरिया यज्ञ करावनहार॥
यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई।
विप्र पड़ोसी वैद्य आपको तपै रसोई॥

There are nine persons whom it is not good to make enemies; and armed man, and accomplice, a king, a man without principle, a rich man, a physician, a panegyrist, poet or any person of special ability.

The persons who should not be made enemies.

जे कामी लोलुप जग माहीं। कुटिल काक इव सबहिं डराहीं॥ लोभी।

जो लोग कामी और लोभी होते हैं वे कौवे की तरह सब से डराते हैं।

All the world over a vicious or a miser man is as much afraid of interference as is a thievish crow.

A miser man.

सन्तोष । कोइ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव, कोटि यत्न पचि पचि मरै ॥
बिनु सन्तोष न काम नसाहीं । काम अछत सुख सपनेहु नाहीं ॥
राम भजन बिनु मिटहिं न कामा । थलविहीन तरु कबहुँ कि जामा ॥

जिस प्रकार नाव चलाने के लिये जल आवश्यक है, उसी प्रकार हृदय की शान्ति के लिये सन्तोष भी परमावश्यक है ।

सन्तोष के विना वासनाएँ नहीं मिट सकतीं और वासनाओं के रहते स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता । जिस प्रकार पानी में पेड़ नहीं जम सकता उसी प्रकार विना भगवान् के भजन के वासनाएँ भी नहीं मिट सकतीं ।

Contentment. Without innate content, sire, none can find peace, a boat will not float without water, though you strain every nerve, enough to kill yourself.

तप । तपबल रचै प्रपंच विधाता । तपबल विष्णु सकल जगत्राता ॥
तपबल शंभु करहिं संहारा । तपबल शेष धरहिं महि भारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी ।

तप की सहायता ही से ब्रह्मा सृष्टि की रचना कर सकते हैं, तप के कारण ही भगवान् विष्णु संसार का पालन करते हैं, तप ही के बल से शिवजी संहार करते हैं और तप ही के बल से शेषजी इस पृथिवी का भार अपने सिर पर रखे हुए हैं । सार यह है कि सृष्टि ही तप के बल पर अवलम्बित है ।

Penance. By the virtue of penance the creator made the world, by the virtue of penance Shambhu destroys it. It is by the virtue of penance that

the great serpent supports the burden of the earth, and in short the whole creation Bhavani depends upon penance.

तेजवन्त लघु गनिय न रानी ॥ तेजवान्
कहँ कुम्भज कहँ सिन्धु अपारा। सोखेउ सुयश सकल संसारा॥ पुरुष।
रवि मण्डल देखत लघु लागा। उदय जासु त्रिभुवन तम भागा॥

तेजस्वी पुरुष यदि आकार में छोटे हों, तो भी उन्हें छोटा नहीं समझना चाहिये। उदाहरणार्थ यद्यपि कुम्भज अर्थात् अगस्त्य ऋषि अपेक्षाकृत बहुत छोटे थे, तथापि वे सारे समुद्र को पी गये थे। यद्यपि सूर्य हमको छोटा ही दीख पड़ता है तथापि उसके उदय होते ही सारा संसार प्रकाशमय हो जाता है।

The glorious are never to be slightly regarded, consider the weakness of Agastya and boundlessness of ocean, yet he drained it dry and his fame has spread throughout the world. Again, the orb of the sun is small to look at, but at its rising darkness is expelled from heaven and earth and hell. The glorious persons.

नारि नैन शर जाहि न लागा। घोर क्रोध तम निशि जो जागा॥ धैर्यवान्
लोभ पाश जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम समान रघुराया॥ पुरुष।
यह गुण साधन ते नहिं होई। तुम्हरी कृपा पाव सब कोई॥

जिसके हृदय में स्त्री के नयनरूपी बाण ने असर नहीं किया, जो क्रोध के वश में नहीं हुआ, जो अपने हृदय में लोभ नहीं लाया, सो मनुष्य भगवान् की तरह है। किन्तु

हे राम! यह इन्द्रिय-दमन का गुण साधन या अभ्यास से नहीं आता, यह केवल तुम्हारी कृपा ही से मिल सकता है।

A man who can withstand temptation.

A man who is invulnerable by the arrow of a woman's eye, who remains wakeful through the dark night of angry passion, and whose neck has never been bound by the halter of covetousness, is your equal, O Raghurai. It is a virtue not attainable by any religious observance; it is only by your grace that one here and one there can accomplish it.

धैर्यवान् और मूर्ख।

सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं॥

मूर्ख लोग ही सुख में प्रसन्न होते और दुःख में रोने लगते हैं। जो पुरुष धैर्यवान् हैं वे दोनों दशाओं में समान धैर्य (हृदय के वेग को वश में रखना) दिखलाते हैं।

Fools and wise men in adversity and prosperity.

Fools triumph in prosperity, and are down cast in adversity; wise men account both alike.

पुण्यात्मा पुरुष और सुख।

पुण्य पुरुष को महि सुख छाई॥
जिमि सरिता सागर महँ जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये। धर्मशील पहँ जाय सुहाये॥

जो व्यक्ति पुण्यात्मा हैं उनके लिये यह संसार सुखमय है। जिस प्रकार नदी सागर में जा गिरती है। यद्यपि सागर स्वयं उसकी चाह नहीं करता इसी प्रकार सुख और सम्पत्ति भी धर्मात्मा पुरुष के यहाँ अपने आप जा बसती हैं।

For a good man this world is full of happiness. Just as the rivers go to ocean, although it does not want them, so wealth and happiness go to a good man of their own accord. The good men and happiness.

मन क्रम वचन चरण रति होई। कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई॥ न छोड़ने योग्य व्यक्ति के गुण।

हे राम! क्या उसको छोड़ देना चाहिये जो मन, कर्म और वाणी से आपके चरणों में प्रीति रखता हो।

Should you discard him, who is devoted in word, deed and heart only to your feet? The qualities of one who should not be forsaken.

अब सुख सोवत सोच नाहिं, भीख माँगि भव खाहिं।
सहज एकाकिन के भवन, कबहुँ कि नारि खटाहिं॥ विरक्तों के यहाँ स्त्रियों का काम नहीं है।

जो लोग निश्चिन्त हो कर सोते हैं, भीख माँग कर पेट भरते हैं और जो स्वभाव ही से अकेला रहना पसन्द करते हैं उनके घर में स्त्रियों का निर्वाह नहीं हो सकता।

And now he never gives her a thought but goes about a begging, and eats and sleeps at his ease. What respectable woman could ever stay with such a confirmed solitary. Women cannot live with the secluded persons.

नहिं कोउ अस जन्मेउ जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥ प्रभुत्व और घमंड।

संसार में कोई ऐसा नहीं हुआ जिसे अधिकार पा कर गर्व न हुआ हो।

Never was a man born into the world whom kingship did not intoxicate. Pride and kingship.

प्रण का तोड़ना ।

सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊँ ।

अपने किये हुए प्रण को तोड़ने से पुण्य नष्ट हो जाते हैं ।

To break one's promise.

If I break my vow, all my religious merit is gone.

वीर और गाली ।

वीरवृत्ति तुम धीर अछोभा । गारी देत न पावौ शोभा ॥

जो लोग वीर हैं और जिनमें क्षोभ नहीं है उनके मुँह से गालियों का निकलना उनको शोभा नहीं देता ।

The brave persons do not use vulgar language.

But if you are a resolute and dauntless warrior, there is no honour to be got by abuse.

वीर और बकवाद ।

शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आप ।
विद्यमान रण पाइ रिपु, कायर कथहिं प्रलाप ॥

जो लोग वीर होते हैं उनका कार्य ही वीरता को दिखला देता है उनको स्वयं अपने आप 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू' बनने की आवश्यकता नहीं पड़ती । किन्तु जो कायर हैं वे समरभूमि में शत्रु से लड़ने के बदले वादानुवाद और बकवाद करने लगते हैं ।

The brave persons are very seldom talkative.

Heroes perform valiant deeds in fight, but do not themselves publish them ; cowards finding a foe before them in a battle talk very large.

जीते हुए मरे लोग ।

कौल काम वश कृपण विमूढ़ा । अतिदरिद्र अयशी अतिबूढ़ा ॥
सदा रोग वश संतत क्रोधी । राम विमुख श्रुति संत विरोधी ॥
तनु पोषक निन्दक अघ खानी । जीवत शव सम चौदह प्रानी ॥

शराबी, कामी, सूम, मूर्ख, बहुत दरिद्री, बदनाम, बहुत वृद्ध, बहुत दिनों का रोगी, सदा क्रोध करने वाला, भगवान् से विरोध रखने वाला, स्वार्थी, निन्दक और पापी ये चौदह तरह के आदमी जीते ही मरे के समान हैं।

The living dead.

An outcaste, a man mad with lust, a miser, a destitute beggar, a man in disgrace, a man in extreme old age, one who is always ill or always in a passion, a rebel against Vishnu, a hater of religion and the saints, a man who thinks only of his own body, a scandal-monger and a man thoroughly vicious, these twelve even while they live, are no better than corpses.

खरे आदमी।

वचन परमहित सुनहि कठोरे। कहहिं सुनहिं ते नर प्रभु थोरे॥

जो लोग कड़वी किन्तु हित की बात सुनने को तयार रहते हैं ऐसे लोग बहुत कम हैं।

Straight-forward persons.

But there are very few people, who care either to hear or give wholesome advice, if it sounds unpleasant.

ठकुर-सुहाती।

सचिव वैद्य गुरु तीन जो, प्रिय बोलहिं भय आश।
राज धर्म तनु तीन कर, होय वेग ही नाश॥

यदि मंत्री भय से ठकुरसुहाती कहे तो राज्य का, यदि वैद्य भय से ठीक बात न बतलावे तो शरीर का और यदि गुरु भय से ठीक उपदेश न दे तो मनुष्य के धर्म का शीघ्र ही नाश हो जाता है।

Flattery. When these three, a minister, a physician and a spiritual adviser; use unfair words, either from fear or hope of reward; dominion, religion and health all are quickly destroyed.

चापलूसी-पसन्द मनुष्य। प्रिय वाणी जे सुनहिं जे कहहीं। ऐसे जग निकाय नर अहहीं॥

जो लोग मीठी (ठकुरसुहाती) बातें कहना और सुनना पसन्द करते हैं उनकी संख्या इस संसार में कम नहीं है।

Men who like flattery. There are plenty of people in the world who are ready to make or listen to pleasant speeches.

आलसी और दैव। नाथ दैव कर कवन भरोसा॥
कादर मन कर एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा॥

दैव का क्या भरोसा किया जाय। यह तो कादरों की समझौती का वसीला है। आलसी लोग ही 'हे ईश्वर' 'हे ईश्वर' किया करते हैं।

The coward. Why trust fortune, my lord? It is the one resource of an idle fellow to quite all arguments urging activity duly he will pray fortune to help him.

मन्त्र। मन्त्र परम लघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्व

मन्त्र यद्यपि देखने में छोटा होता है तथापि उसका प्रभाव इतना अधिक होता है कि उससे ब्रह्मा व विष्णु व शिव तथा सारे देवता वश में किये जा सकते हैं।

Charm. A charm is a very little thing, yet it overpowers Brahma, Vishnu and Shiva.

धर्म तें विरति योग तें ज्ञाना। ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना॥ मोक्ष के साधन।

धर्म के अनुसार चलने से वैराग्य उपजता है, योग से ज्ञान उत्पन्न होता है और वेद कहते हैं कि ज्ञान ही से मोक्ष मिलता है।

After piety, ascetisism; and after ascetic meditation knowledge, as the Vedas declare is the giver of salvation. Means of getting salvation.

रामचन्द्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्वाण। मोक्ष की शर्त।
ज्ञानवन्त अति सोऽपि नर, पशु बिनु पूँछ विषाण॥

जो मनुष्य, वह चाहे कितना ही ज्ञानी क्यों न हो, भगवान् के भजन विना ही मोक्ष चाहता है, वह अवश्य ही विना पूँछ और सींग का पशु है।

The wisest of men, who hopes for salvation without prayer to Rama, is like a beast without tail or horns. The condition for salvation.

गुरु श्रुति सम्मत धर्म फल, पाइय बिनहिं कलेश। धर्मफल पाने का सरल उपाय।

गुरु के वचन, और धर्मपुस्तकों की आज्ञानुसार चलने से विना किसी झंझट ही के धर्म का फल मिल जाता है।

The reward of virtue can be obtained without trouble by submission to scripture and one's spiritual direction. Reward virtue.

रिपु, रुज, पावक, पाप, प्रभु, अहि गणिय न छोट करि। छोटी न गिनने योग्य वस्तु।

हे स्वामी! शत्रु, रोग, अग्नि, पाप और साँप को चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो कम न समझना चाहिये।

Things which should never be regarded as trifles.

An enemy, sickness, fire, sin, a master and a serpent are never to be accounted trifles.

पतिव्रता।

धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी।

जो स्त्री पतिव्रता है उसका जीवन धन्य है।

The faithful wife.

Blessed is the wife, who is true to her husband.

चार प्रकार की पतिव्रता।

जग पतिव्रता चार विधि अहहीं। वेद पुराण सन्त अस कहहीं॥
उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥
धर्म विचारि समझ कुल रहहीं। सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं॥
बिनु अवसर भयतें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥

सब लोगों का मत है कि पतिव्रता स्त्रियाँ चार प्रकार की होती हैं। उत्तम तो वे हैं जो स्वप्न में भी दूसरे मनुष्य को नहीं देखतीं। मध्यम वे हैं जो दूसरी स्त्रियों के पतियों को पिता पुत्र भाई की तरह समझती हैं। जो स्त्रियाँ धर्म के भय से संयम से रहती हैं वे निकृष्ट श्रेणी की हैं। और अधम स्त्रियाँ वे हैं, जो मौक़ा न मिलने और डर के कारण संयम से रहती हैं। जो स्त्री अपने पति से सच्ची नहीं है वह असंख्य वर्षों तक रौरव नरक में रहती है।

Four kinds of faithful wives.

There are four kinds of faithful wives in the world, as the Vedas, Puranas and saints all say. The best is so firmly settled in mind that she could not even dream of their being any other

man living, the next regards mother's husband as her own brother, or father, or son; she who is restrained by thought of duty and consideration for her family is said in scriptures to be a woman of low character; but reckon her the very lowest of all, who is restrained only by fear and want of opportunity.

जो पै प्रिय वियोग विधि कीन्हा। तौ कस मरण न माँगे दीन्हा॥ वियोग।

जब ब्रह्मा ने हमारे भाग्य में हमारे प्रियतम का वियोग ही कराया तो उन्होंने हमको माँगने पर भी मृत्यु क्यों न दी?

As god has robbed us of our beloved why has he not granted us our prayer to send us death. Separation.

वन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय विषाद परिताप घनेरे॥ पति-
प्रभुवियोग लवलेश समाना। होहिं न सब मिल कृपानिधाना॥ वियोग।

जंगल में रहने के आपने बहुत दुःख कहे हैं—वहाँ के भय, शोक और संताप सभी बतलाये हैं, पर वे सब मिल के भी पति के वियोग के दुःखों के पासंग भी नहीं हो सकते।

You have recounted my lord numerous hardships of the forest, its terrors, annoyances and many discomforts, but fountain of mercy, all these united will not be comparable to the pain of bereavement. Separation from husband.

नारिधर्म पतिदेव न दूजा। नारीधर्म।

स्त्रियों के धर्म में पति के सिवाय और कोई आराध्य देवता नहीं है।

The duty of the wife.

To say my lord and my god is the sum of all wifely duty.

नारीधर्म। यहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा। सादर सास ससुर पद पूजा॥

(स्त्री के लिये) सास ससुर की सेवा करना ही सब से बड़ा धर्म है।

Duty of woman.

There is no other duty so paramount as reverential submission to a husband's parents.

नारीधर्म। जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते॥
तनु धन धाम धरणि पुर राजू। पतिविहीन सब शोकसमाजू॥
भोग रोगसम भूषण भारू। यम यातना सरिस संसारू॥
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी। तैसेहि नाथ पुरुष बिनु नारी॥
खग मृग परिजन नगर वन, बलकल विमल दुकूल।
नाथ साथ सुर सदन सम, पर्णशाल सुखमूल॥

जितने (सांसारिक) स्नेह और नाते हैं, वे सब स्त्री के लिये—पति के विना—सूर्य से भी अधिक संतप्त करने वाले हैं। पति के विना स्त्री के लिये शरीर, धन-दौलत, घर, जायदाद, राज्य आदि सब अपार शोक (के उत्पन्न करने वाले) हैं। उस स्त्री के लिये सांसारिक सुख रोग के समान, गहना बोझ के समान, और स्वयं इस संसार का निवास यमलोक के कष्ट के समान है। जिस प्रकार प्राणों के विना देह (निरर्थक) है, या जिस प्रकार जल के विना नदी (बेकाम) है उसी प्रकार पति के विना स्त्री (निस्सार) है।

पति के साथ रहने में (स्त्री को) पशु और पक्षी कुटुम्बी मालूम होते हैं, जंगल शहर मालूम होता है, पत्तों के कपड़े

बढ़िया कपड़े मालूम होते हैं और पत्तों की कुटी भी इन्द्र के महल के समान मालूम होती है।

Duty of wife.

All love and every tie of kindred, to a woman without her husband, are a greater distress than the sun's most burning heat. Life, wealth, house, land, city and empire are but accumulated misery to a woman bereft of her lord. Ease is disease, her jewels a burden and the world like the torments of hell. As the body without a soul, as a river without water, so, my lord, is a woman without her husband.

The birds and deer will be my attendants, the forest, my city, and strips of barks my glistening robes; with my lord a hut of grass will be as the palace of the gods, and all will be well.

नारिधर्म।

मातु पिता भ्राता हितकारी। मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि भर्ता वैदेही। अधम सो नारि जो सेव न तेही॥
वृद्ध रोगवश जड़ धनहीना। अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना॥
ऐसेहु पति कर किय अपमाना। नारि पाव यमपुर दुख नाना॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा॥
पतिवंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प शत परई॥
क्षण सुख लागि जन्म शतकोटी। दुख न समुझ तेहिसम को खोटी॥
बिनु श्रम नारि परमगति लहई। पतिव्रत धर्म छांड़ि छल गहई॥
पति प्रतिकूल जनमि जहँ जाई। विधवा होय पाय तरुणाई॥

हे राजकुमारी! माता, पिता, भाई, हितू आदि भी को

एक निर्दिष्ट सीमा तक सुख दे सकते हैं। किन्तु स्त्री को पूरा सुख पति ही से मिल सकता है । वह स्त्री महानीच है जो पति की सेवा नहीं करती । यदि पति बूढ़ा हो, रोगी हो, मूर्ख हो, दरिद्री हो, अन्धा हो, बहिरा हो, क्रोधी हो या बड़ा ग़रीब हो तौ भी यदि स्त्री अपने ऐसे पति का भी अपमान करे, तो वह स्त्री सैकड़ों कल्पों तक नरक में पड़ी बड़े दुःख पावेगी। स्त्रियों के लिये केवल एक ही व्रत, नेम और धर्म कहा गया है और वह है हर तरह से पति के चरणों से प्रेम करना। जो स्त्री क्षणिक सुख के लिये अपने भावी जन्म बिगाड़ बैठती है, उससे बढ़ कर मूर्खा और कौन स्त्री हो सकती है ? जो स्त्री हृदय से पति की सेवा करती है वह सहज ही मोक्ष पाती है। जो स्त्री पति के विरुद्ध आचरण करती है, वह अगले जन्मों में युवावस्था ही में विधवा हो जाती है।

Duties of the woman.

Hearken, royal lady, mother, father, brethren and friends are all good in a limited degree, but a husband, Vaidehi, is an unlimited blessing, and vile is the woman who worships him not. Though her husband be old, diseased, impotent and poor, blind, deaf, passionate and utterly vile, yet even so the wife who treats him with disrespect shall suffer many torments in hell. Her one duty, her one fast and penance consist in a devotion of body, word and thought to her husband's feet. She who deceives her husband and carries an intrigue with another man shall be cast for a

hundred ages into the hell called the terrible who such a wretch as she, who for a moment's pleasure considers not the torment that shall endure through a hundred million lives? Without any difficulty a woman attains to salvation, if only without guile she adhere to her duty as a faithful wife, while she, who lives to despise her spouse, becomes a widow, while still a girl.

काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह की धारि। स्त्री।
तिन महँ अति दारुण दुखद, माया रूपी नारि॥

काम, क्रोध, लोभ, मद आदि यद्यपि मोह की प्रबल धार हैं तो भी इन सब से अधिक भयङ्कर मायाविनी स्त्री है।

Lust, anger, greed and all other violent passion form a rushing torrent of deception, but among them all, the most formidable and the most calamitous is that incarnation of vanity women. Women.

दीपशिखा सम युवति तनु, मन जनि होसि पतंग। स्त्री।
भजिय राम तजि काम मद, करिय सदा सत्संग॥

युवती स्त्री का शरीर दीपक की लौ के समान है; रे मन! उसमें गिरने के लिये पतंग मत बन। काम तथा मद को छोड़ कर भगवान् को भज और सत्संग कर।

Women is like the flame of a candle, let not your soul be as the moth, but discard love and intoxication, worship Rama and hold communion with the saints. Women.

स्त्री । जो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनी विधु मुख निरखि ।
विकल होइ हरियान, नारि विश्व माया प्रगट ॥

बड़े २ ज्ञानी ऋषि भी स्त्री के स्वरूप रूपी मायाजाल में फँस जाते हैं—स्त्री की माया सब जानते हैं ।

Tho women. Even great saint and philosopher is distracted at the sight of a woman, with her fawn-like eyes and moon bright face. Tho maya of woman is well-known in the world.

स्त्रीचरित्र । सत्य कहहिं कवि नारि स्वभाऊ । सबविधिअगम अगाधदुराऊ ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥
काह न पावक जरि सकै, काह न सिन्धु समाय ।
कहा न अबला करि सकै, काहि काल नहिं खाय ॥

कवि लोग ठीक ही कहते हैं कि स्त्री के स्वभाव का पता नहीं जाना जा सकता । चाहे शीशे में मनुष्य अपनी परछाईं आप ही क्यों न पकड़ ले (जो कि असम्भव है) किन्तु वह स्त्री के हृदय की थाह नहीं पा सकता । जिस प्रकार अग्नि सब कुछ जला सक्ती है, जिस प्रकार समुद्र में सब कुछ समा सक्ता है, जिस प्रकार समय अवसर पा कर सब कुछ नष्ट कर सक्ता है उसी प्रकार ऐसा कोई काम नहीं जो स्त्रीजाति न कर सकै ।

स्त्री के इस परिवर्तनशील स्वभाव का कारण यह है कि उसमें चंचलता और अनस्थिरता की मात्रा बहुत ही बढ़ी बढ़ी है । स्त्री में स्वयं विचार करने की शक्ति विकसित नहीं होने पाती । जो बात उससे कही जाती है उसे वह बहुधा

बिना सोचे समझे मान लेती है। उसका हृदय सरलता पूर्वक मोड़ा जा सकता है। अतएव उसको जैसी सलाह मिलती है या जैसा मौक़ा आ पड़ता है उसके अनुसार (बहुधा) बिना समझे बूझे ही वह बड़े २ साहस के काम कर बैठती है। ध्यान में रखना चाहिये कि ये कथन औसत दर्जे की स्त्री के लिये ही उपयुक्त हैं।

विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी। श्रीशङ्कराचार्य।

ऊपर के दोहे का जवाब—

धर्म न पावक में जरै, मन नहिं सिन्धु समाय।
पुत्र न अबला करि सकै, नाम काल नहिं खाय॥

What is there that fire will not burn; what is there that ocean cannot contain, what cannot a woman do in her strength; or what is there in the world that death (time) does not devour? Nothing is impossible for a woman to do.

सभय स्वभाव नारि कर साँचा। मंगल माहिं अमंगल राँचा॥ स्त्री स्वभाव।

यह सच है कि स्त्री का स्वभाव बड़ा डरपोंक और सशंक होता है वे अच्छे में भी बुरे का सन्देह करने लगती हैं।

A woman is naturally cast in a timorous mould, and even in prosperity has a mind ill at ease. Nature of woman.

नारि स्वभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं॥ स्त्री
सहसा अनृत चपलता माया। भय अविवेक अशौच अदाया॥ स्वभाव।

कवि लोग ठीक ही कहते हैं कि स्त्रियों में आठ अवगुण स्वभाव ही से रहते हैं। वे ये हैं—उतावली[1], झूठ[2], चंचलता[3], छल[4], डर[5], अज्ञान[6], अपवित्रता[7] और निर्दयता[8]।

The nature of woman.

The poets have truly described women's nature. There are eight faults from which she is never free at heart; imprudence, falsehood, fickleness, infatuation, timidity, want of judgment, impurity and illiberality.

स्त्री के रिश्ते।

आरजसुत-पद-कमल बिनु, बादि जहाँ लगि नात।

पति के बिना सारे रिश्ते व्यर्थ हैं।

Relations of woman.

Away from the lotus feet of my husband all my kindred are naught.

बड़ों का स्नेह।

बड़े सनेह लघुन पर करहीं। गिरि निज सिरन सदा तृण धरहीं॥

वयोवृद्ध छोटों पर स्नेह करते हैं—जैसे पहाड़ इतने बड़े हैं और तिनके (छोटे पेड़) इतने छोटे हैं पर पहाड़ उनको न दबा कर स्नेह के कारण उनको अपनी चोटी पर स्थान देते हैं।

The affection of the great ones.

It is a maxim of *scriptures* that the great show kindness to small, thus mountains, ever bear tiny grasses on their tops.

बड़ों का स्नेह।

जो लरिका कछु अनुचित करहीं। गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं॥

बड़े लोग स्नेह के कारण लड़कों की भूलों को भुला देते हैं। भुला ही नहीं देते, किन्तु अपने स्नेहाधिक्य के कारण वे उन भूलों से प्रसन्न भी हो जाते हैं। (गोस्वामी यहाँ साधारण माता पिताओं का उल्लेख कर रहे हैं)।

The affection of the elders.

When a child commits any naughtiness, his guru and father take it lightly.

मात पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करिय सुभाय। बड़ों की
लहेहु लाभ तिन जन्म कर, नतरु जन्म जग जाय॥ सलाह।

उन्हीं लोगों का जन्म सफल है जो माता पिता गुरु और स्वामी की आज्ञा को हृदय से स्वीकार कर के, उसीके अनुसार काम करते हैं। इससे विपरीत काम करने वालों का जन्म व्यर्थ है।

They who submit without reserve to the commands of their father and mother, their spiritual director or their lord are born into the world to some purpose; otherwise their birth is in vain. Commands of the superiors.

गुरुपितुमातुस्वामिहित बानी। सुनिमनमुदितकरियभलिजानी॥ बड़ों की
उचित कि अनुचित किये विचारू। धर्म जाय सिर पातक भारू॥ आज्ञा।

गुरु, माता, पिता तथा स्वामी की हितकर आज्ञा प्रसन्न मन हो पालन करनी चाहिये। यदि उसके विषय में तर्क करो तो बड़ा पाप हो।

The injunctions of a guru, a father or a mother, or master, or friend should be cheerfully performed as soon as heard, and as all for the best; to deliberate whether they are right or wrong is a failure of duty and involves grievous sin. Commands of the superiors

समरथ को नहिं दोष गुसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं॥ बड़ों के दोष क्षम्य हैं।

सूर्य और अग्नि सभी वस्तु को खा जाते हैं, किन्तु इन्हें कोई नीच नहीं कहता। गंगा में सब प्रकार के जल

(हिमालय का पवित्र जल और बड़े २ शहरों के नल) बहते हैं, तथापि उसे कोई अपवित्र नहीं कहता। बात तो यह है कि जो समर्थ हैं जो प्रतिष्ठावान् हैं जो अधिकारवान् हैं उन्हें दोष लगाने का साहस किसीको नहीं होता।

The faults of the great ones are over-looked.

The powerful, my friend, are always faultless, like the sun, fire or the Ganges.

बड़ों का शीघ्र नाश करने का उपाय।

संग तें यती कुमन्त्र से राजा। मान तें ज्ञान पान तें लाजा॥
प्रीति प्रणय बिनु मद तें गुनी। नाशहिं बेग नीति अस सुनी॥

बुरा संग करने से संन्यासी का, बुरी सलाह पर चलने से राजा का, घमंड से ज्ञान का, नम्रता विना प्रेम का और अहंकार से गुण का नाश तत्काल ही हो जाता है।

Means to destroy great men.

An ascetic is quickly undone by attachment, a king by ill-counsel, wisdom by conceit, modesty by drinking, friendship by want of consideration and good sense by pride, so goes the saying.

मुखिया।

मुखिया मुखसों चाहिये, खान पान को एक।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक॥

तुलसीदास जी कहते हैं कि स्वामी या सर्दार या मुखिया मुख के समान होना चाहिये, जो खाने पीने को तो एक हो, किन्तु सब अङ्गों का विचारपूर्वक पालन (पुष्ट) करता हो।

Leader.

A chief should be like the mouth, which alone (says Tulsi) does all the eating and drink-

ing, and yet supports and nourishes to a nicety each separate member of the body.

विधि करतब सब उलटे अहहीं ॥ ब्रह्मा की
निपट निरंकुश निठुर निशंकू। जेहि शशि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥ विडम्बना
रूख कल्पतरु सागर खारा।

ब्रह्मा के सभी करतब उलटे हैं—उसने चन्द्रमा को रोगी और सकलङ्क बनाया है। वह बड़ा ही निरंकुश, निःशङ्क और निष्ठुर है। उसने कल्पतरु को पेड़ और समुद्र को खारी कर दिया है।

God's doings are all perverse. He is utterly uncontrollable, cruel and remorseless, who has made the moon sickly spotted, the tree of paradise a lifeless block and the ocean all salt.

Unexplainable works of God.

कोउ नृप होय हमें का हानी। चेरी छाँड़ि न होउब रानी ॥ स्वार्थहीन बात।

कोई भी राजा हो, हमें इससे क्या मतलब है, हम तो टहलनी ही बनी रहेंगी, रानी न हो सकेंगी।

Whoever is king, what do I lose? Shall I cease to be a servant and become a queen?

The thing in which we are not interested.

निज हित अनहित पशु पहिचाना। हितज्ञान।

पशुओं में भी अपने हित (भलाई) और अनहित
ई) की बात समझने की बुद्धि होती है।

he brute beasts know what is good or

The knowledge of good and evil.

होतव्यता। तुलसी जस होतव्यता, तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय॥

तुलसीदास कहते हैं, जैसी होनहार होती है उसीके अनुसार सब बानक बँध जाते हैं। या तो वह स्वयं उसके (मनुष्य के) पास चली आवे या वह उसे वहाँ खींच ले जाय।

The destiny. Our circumstances thrust us in the path of destiny. Either (the distiny) approaches us or makes us to approach it.

सेवक। सेवक सो जु करै सेवकाई। अरि करनी करि करिय लराई॥

सच्चा नौकर सेवा करता है। यही उसका कर्तव्य कर्म है। किन्तु जो व्यक्ति सेवा करने के बदले दुश्मनी का काम करता है, वह सेवकाई तो नहीं, हाँ, लड़ाई अवश्य करता है।

The servant. A servant is one who does service, but he who does the deeds of an enemy must be fought.

सेवक धर्म। सबते सेवक धर्म कठोरा।

जितने कर्तव्य हैं उनमें सेवक का कर्तव्य सब से कठिन है।

Duty of a servant. A servant's work is always the hardest.

सेवा। भानु पीठ सेइय उर आगी। स्वामी सेइय सब छल त्यागी।
तजि माया सेइय परलोका। मिटहिं सकल भवसम्भव शोका॥
देह धरे कर यह फल भाई। भजिय राम सब काम बिहाई॥

सूर्य का सेवन केवल पीठ से करे (अर्थात् सूर्य पीठ करके तापे) अग्नि का सेवन केवल छाती

(अर्थात् आँच आगे रख कर तापे) किन्तु स्वामी की सेवा सब तरह से करे। संसारी माया और ममता को छोड़ कर परलोक की सेवा करने से संसार की सब बाधाएँ मिट जाती हैं। शरीर तभी सुफल होता है जब सब छोड़ कर भगवान् का भजन किया जाय।

The sun is served with back and the fire with front, but a master must be served back and front alike, without any subterfuges. Discard the unrealities of the world and consider the future; so shall all the troubles connected with the existence be destroyed. This is the end, brother, for which we were born, to worship Rama without any desire for self. Service.

सेवा धर्म कठिन जग जाना। सेवा धर्म।

संसार जानता है कि सेवा धर्म सब से कठोर है।

All the world knows that loyal service is difficult. Service.

गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं। सेइय सकल प्राण की नाईं॥ सेवा के अधिकारी।

हमें अपने गुरु, माता, पिता, भाई, देवता और स्वामी की सेवा प्राणों की सेवा के समान करनी चाहिये।

A guru, a father and mother, brethren, the gods and our master are all to be tended as our own life. The men who ought to be served.

सेवक प्रभुहिं परै जानि भोरे। स्वामी।

स्वामी सेवक को नहीं भुलाते।

Master.

The master cannot forget his faithful servant.

सेवक और स्वामी ।

सेवक कर पद नैन से, मुख सों साहिब होय ।
तुलसी प्रीति की रीति लखि, सुकवि सराहहिं सोय ॥

जैसे नैनों से किसी फल को देखा, हाथ पैर उसे लेने गये, सेवक इन्हींकी तरह आज्ञाकारी होने चाहिये । फिर मुख (स्वामी) ने उसे खाया, किन्तु उसने सभी को पुष्टता (हिस्सा) दी । स्वामी ऐसा ही होना चाहिये । सुकवि लोग ऐसे ही स्वामी की प्रशंसा करते हैं ।

Master and servant.

A servant should be like a hand, or foot, or eye, a master like the head. Hearing this description of love, says Tulsi, the greatest poets are full of admiration.

आज्ञा पालन ।

आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा ।

अच्छे मालिक की पूरी सेवा यही है कि उसकी आज्ञा का पालन किया जाय ।

Submission.

There is no duty so imperative as submission.

छोटों को बड़ों का भरोसा ।

सेवक सुत पितु मातु भरोसे । रहै अशोच बनै प्रभु पोसे ॥

सेवक स्वामी के और पुत्र माता पिता के भरोसे निश्चिन्त रहता है और उन्हींके पालने से बनता है ।

Confidence in God.

As a servant has confidence in his master, or a child in its mother, so all dwell secure under the protection of God.

सुमति और कुमति ।

सुमति कुमति सबके उर रहईं । नाथ पुराण निगम अस कहईं ॥
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना । जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना ॥

धर्मशास्त्र में ऐसा लिखा है कि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में सुमति (सुबुद्धि) और कुमति (कुबुद्धि) दोनों ही रहती हैं। किन्तु जहाँ सुमति है वहाँ विभव आ जाता है और जहाँ कुमति है वहाँ अन्त में नाना विपत्तियाँ आ जाती हैं।

In every one's breast, my lord, so the Vedas and Puranas declare, either wisdom or unwisdom finds a dwelling. Where wisdom dwells, there, too, is every kind of prosperity; and where unwisdom, there is final destruction. Wisdom and folly.

सोचिय विप्र जो वेदविहीना। तजि निजधर्म विषयलवलीना॥ सोचनीय व्यक्ति।
सोचिय नृप जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्राणसमाना॥
सोचिय वैश्य कृपण धनवानू। जो न अतिथि शिवभक्त सुजानू॥
सोचिय शूद्र विप्र अपमानी। मुखर मानप्रिय ज्ञानगुमानी॥
सोचिय पुनि पतिवंचक नारी। कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी॥
सोचिय बटु जो व्रत परिहरहीं। जो नहिं गुरु आयसु अनुसरहीं॥
सोचिय गृही जो मोहवश, करै कर्म पथ त्याग।
सोचिय यती प्रपंचरत, विगत विवेक विराग॥
वैखानस सोइ सोचन योगू। तप विहाय जेहि भावै भोगू॥
सोचिय पिशुन अकारण क्रोधी। जननि जनक गुरु बन्धु विरोधी॥
सबविधि सोचिय पर अपकारी। निज तनुपोषक निर्दय भारी॥
सोचिय लोभनिरत रतकामी। सुरश्रुतिनिन्दक परधनस्वामी॥
सोचनीय सबही विधि सोई। जो न छाँड़ि छल हरिजन होई॥

उस ब्राह्मण की दशा पर शोक करना उचित है, जो वेद नहीं जानता और अपना धर्म छोड़ कर शरीर की वासनाओं की पूर्ति में लगा है। उस राजा की दशा पर शोक करना

उचित है, जो नीति नहीं जानता और प्रजा को प्राणों के समान नहीं समझता। उस धनी सूम वैश्य की दशा पर खेद करे, जो अतिथि सत्कारी और शिवभक्त न हो। उस शूद्र की दशा पर खेद करे, जो ब्राह्मणों का अपमान करता हो, जो कटुवादी हो, जो नम्र न हो और जिसे ज्ञान का घमंड हो। फिर उस स्त्री की दशा के ऊपर खेद करे, जो अपने पति के सहवास से वंचित रहै, जो कर्कशा हो, स्वेच्छाचारिणी और झगड़ालू हो। उस ब्रह्मचारी की दशा पर खेद करे, जो अपने संयम से अलग रहै और जो गुरु की आज्ञा का पालन न करता हो। उस गृहस्थ की दशा पर शोक करे, जो मोह के वश में आ कर अपने कर्तव्य पथ से भ्रष्ट हो जाय या उस संन्यासी की दशा पर शोक प्रकट करे, जो ज्ञान, बुद्धि और वैराग्य से प्रेम न रक्खै और सांसारिक झगड़ों और वासनाओं में लिप्त रहे। उस वानप्रस्थ आश्रम में रहने वाले की दशा पर शोक करे, जो तप न कर के विषय वासनाओं में लीन रहे। उस चुगली करने वाले या विना किसी कारण क्रोध करने वाले व्यक्ति की दशा पर शोक करे, जो माता, पिता, गुरु और बान्धवों से विरोध रखता हो। फिर सब से अधिक शोक उस व्यक्ति की दशा पर करे, जो दूसरों का अहित करने वाला हो, जो अपने शरीर के सुख के लिये दूसरों को कष्ट देता हो। उस कामी और लालची व्यक्ति की दशा पर शोक करे, जो पराया धन हड़प लेता हो, देवताओं तथा वेदों का निन्दक हो। अन्त में उस व्यक्ति की दशा पर सब तरह से शोक करे, जो छल छोड़ कर भगवान् का भक्त न हो जाय।

Pitiable the Brahman who is ignorant of the Veda and has abandoned his faith and become observed in the delights of sense ; pitiable the king who knows not the principles of government and to whom his subjects are not as dear as his own life ; pitiable the merchant, miserly and rich, who regards not the duties of hospitality nor the service of Mahadeva ; pitiable the Sudra who insults a Brahman, who is insulting in his speech, ambitious and disregardful of the law ; pitiable again the wife who deceives her own husband, and who is perverse, quarrelsome and self-willed ; pitiable the religious student who breaks his vows and obeys not the commands of his guru ; pitiable the householder who, overcome by delusion, forsakes the path of religion ; pitiable the ascetic who is enamoured of the world and has lost his judgment and self-governance ; pitiable the anchorite who has given up penance and takes delight in pleasure; pitiable the back-biter and the angry without a cause, the enemies of their own parents, their spiritual guides and their kinsmen ; pitiable in every way is the malevolent who cherishes self and is utterly merciless ; pitiable in every way is he who does not eschew guile and become a follower of Hari.

itiable persons.

अधिकारी और गूढ़ तत्त्व ।

गूढ़हु तत्त्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥

यदि साधु को दुःखी और योग्य व्यक्ति मिल जाय तो वे उससे साधारण तत्त्व को क्या बड़े गूढ़ तत्त्व को भी नहीं छिपाते ।

The mystic instruction.

Even the saints do not forbid mystic instruction to an able man in great distress.

संसार और स्वार्थ से उत्पन्न प्रीति ।

उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बन्धु कोउ नाहीं ॥
सुर नर मुनि सबकी यह रीती । स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ॥

हे पार्वती ! भगवान् के समान संसार में गुरु, पिता, माता, भाई कोई भी हित करने वाला नहीं है । देवता मनुष्य और ऋषि सभी अपने स्वार्थ के कारण प्रेम करते हैं ।

Worldly love is due to selfish motives.

O Uma, there is no such friend as Rama in the world, neither guru, nor father, nor mother, nor kinsman, nor lord. It is the way with all other gods, men and saints, to make friends for selfish purposes.

पुत्रवती माता ।

पुत्रवती युवती जग सोई । रघुवर भक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बाँझ भलि बादि बियानी । रामविमुख सुत तें हितहानी ॥

संसार में वही स्त्री पुत्रवती है जिसका पुत्र भगवद्भक्त हो । यदि ऐसा पुत्र न हो तो स्त्री का पुत्र जनना ही वृथा है—ऐसे गर्भ धारण से बाँझ होना भला, क्योंकि भगवद्-द्रोही पुत्र से अमङ्गल ही होता है ।

True mother.

A mother indeed is she who has a son devoted to Raghubar ; if not it is better to be barren, she

has given birth in vain; a son who is Ram's enemy is a curse.

धन्य जन्म जगतीतल तासू। पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू॥ सपूत।
चार पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके॥

उसी पुत्र का जन्म इस संसार में सफल है जिसके कर्तव्य सुन कर पिता को आनन्द हो। जो पुत्र माता पिता से प्राणों की तरह स्नेह रखता है वह संसार के चारों पदार्थों अर्थात् अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के पाने का अधिकारी हो जाता है।

"पितरः प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः।"

Blessed is his birth into the world whose father is rejoiced to hear of his doings. He has in his hands all the four rewards of life, who holds his parents dear as his own life. A worthy son.

अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु बैन। सत्पुत्र।
ते भाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति ऐन॥

जो विना तर्क किये पिता की आज्ञा का पालन करते हैं वे स्वर्ग पाते हैं और सुख और यश के भागी होते हैं।

They who cherish their father's words, without discussing right or wrong, they are vessels of honor and glory and dwell in the palace of the king of heaven. Worthy son.

* * * सोइ सुत बड़ भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी॥ पुत्र का
तनय मातु पितु पोषणहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥ धर्म।

वही पुत्र भाग्यवान् है जो माता पिता की आज्ञा का पालन करे । माता पिता की सेवा करने वाले पुत्र इस संसार में बहुत ही थोड़े हैं ।

(ध्यान रखना चाहिये कि यद्यपि तुलसीदास जी ने यह त्रेता के बारे में कहा है, तथापि उनके हृदय में कलियुग का हाल है ।)

The duties of a son.

Blessed is the son who obeys his parent's commands ; a son who cherishes his father and mother is not often found in the world.

पिता की आज्ञा ।

पितु आयसु सब धर्म क टीका ।

पिता की आज्ञा मानना ही सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म है ।

The father's commands.

A father's command is the most paramount duty.

पिता की आज्ञा ।

पिता वचन फुर चाहिय कीना ।

पिता की आज्ञा का पालन शीघ्र ही करना चाहिये ।

Commands of a father.

The word of father must be obeyed.

सगा भाई ।

सुत वित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥
मिलहि न एक सहोदर भ्राता ॥

लड़का, धन, स्त्री, घर और कुटुम्ब ये बार बार नष्ट होते और बार बार मिलते हैं, किन्तु सगा भाई बार बार नहीं मिलता ।

Brother.

Sons, riches, wives, house and kinsfolk come again time after time in a life, but a real brother is not to be had.

सहज सुहृद् गुरु स्वामि सिख, जो न करहि हित मानि । सलाह ।
सो पछताइ अघाइ उर, अवशि होहि हित हानि ॥

जो सच्चे मित्र, गुरु और मालिक की हितकारक सलाह के अनुसार काम नहीं करते, वे पीछे बहुत पछताते हैं और उनकी बड़ी हानि होती है ।

जो न मानै बड़ों की सीख । सो खपटा लै माँगे भीख ॥

Whoever with a view to her own good does not at once accept the advice given by a friend, or a guru, or her husband shall assuredly have a surfeit of repentance and gain no good. Advice.

सो धन धन्य प्रथम गति जाकी ॥ सफल धन ।

इस धन का होना सार्थक है जिसका उपयोग दान में किया जाय ।

(धन की तीन गति हैं—दान, भोग और नाश)

Blessed is the wealth, which is utilised for charitable purposes. The wealth.

इहि तनु कर फल विषय न भाई । स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥ शरीर का फल ।
नर तनु पाइ विषय मन देहीं । पलटि सुधा तें शठ विष लेहीं ॥

इस मनुष्य शरीर का उद्देश्य न तो वासनाओं का पूरा करना ही है और न स्वर्ग पाना ही है क्योंकि स्वर्ग के अनन्तर फिर यहीं आना होगा । जो लोग मनुष्य शरीर पा कर भी विषयों में मन लगाते हैं, वे उन मूर्खों की तरह हैं, जो अमृत के बदले विष ले लेते हैं ।

The object of the human body.

Materialism, brother, is not the proper object of the human body; it is happiness for a very brief period, but ends in misery. The possessor of a human body who gives himself up to materialism is like a fool who chooses poison in preference to ambrosia.

सांसारिक सुख।

सुत वित नारि त्रिविध सुख कैसे। उपजहिं घटा जाहिं नभ जैसे॥

जिस प्रकार आकाश में बादल हो कर उड़ जाते हैं, उसी प्रकार लड़के, धन और स्त्री का सुख हो कर भी नहीं रह जाता।

Worldly pleasure.

Just as rain-clouds vanish as soon as they appear, so the happiness derived from the possession of wealth or company of sons or wife vanishes.

मृत्यु।

बचहि न जग कोउ आये काला।

मृत्यु आने पर संसार में कोई नहीं बच रहता।

The death.

Nobody can escape, when death sends his call.

पृथिवी भार।

गिरि सर सिन्धु भार नहिं मोही। जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही॥

पृथिवी कहती है कि पहाड़, झील, समुद्र का (मिला कर भी) मुझे इतना बोझ नहीं मालूम पड़ता, जितना (मेरे ऊपर) बोझ एक परद्रोही (दूसरे की बुराई चीतने वाले) के रहने का मालूम पड़ता है।

The burden of the earth.

The weight of mountains, lakes and seas is not so heavy as that of a tyrant.

साधुसमाज न जा कर लेखा। राम-भक्ति महँ जासु न रेखा॥ जाय जियत जग सो महिभारू। पृथिवी के भार।

जिसने साधुओं की सत्संगति नहीं की, जिसके हृदय में भगवान् की भक्ति नहीं है, वह जीते ही पृथिवी का भार हो रहा है।

Whoever is not numbered among the just, nor counted among Rama's votaries, is all the time that he lives only a burden to earth. Burden of humanity.

सहसा करि पछताहिं विमूढ़ा। मूर्ख।

मूर्ख लोग सहसा कोई काम कर बैठते हैं और फिर पीछे पछताते हैं।

Fools act in haste and repent. Fools.

फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा बरसहिं जलद। मूर्ख।
मूरख हृदय न चेत, यदि गुरु मिलहिं विरंचिसम॥

चाहे पानी के बदले अमृत ही उनके ऊपर क्यों न बरसे, किन्तु बेंत में कभी फूल या फल नहीं लगते। उसी प्रकार मूर्ख की समझ ठीक नहीं होती चाहे उसे स्वयं ब्रह्मा ही गुरु बन कर क्यों न समझावें।

Though the clouds rain ambrosia upon it, the bamboo neither flowers nor fruits; so the soul of a fool never learns, though he may have Brahma and Siva for his teachers. The foolish person.

बातुल भूत विवश मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन सँवारे॥ पागल।
जिनकृत महामोह मदपाना। तिनकर कहा करिय नहिं काना॥

जिन्हें बाई हो, जिन पर भूत चढ़ा हो, या जो मतवाले हों उनके मुंह से कुछ भी समझ की बात नहीं निकलेगी। जो मोहरूपी मदिरा का पान करते हैं उनके वचनों पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

The men whose words should not be taken seriously.

Lunatic, devilish, drinker, they can utter nothing to the purpose and are so intoxicated with a strong delusion that no one should give ear to their ravings.

जैसे से तैसे निकलता है।

नहिं विषबेलि अमिय फल फरहीं।

विष की बेलि में अमृतफल नहीं लगते अर्थात् बुरे से बुरे ही निकलते हैं।

The like grows from the like.

Fruits of ambrosia do not grow from a poison stock.

झूठ।

नहिं असत्य सम पातक पुञ्जा।

एक झूठ की बराबरी दूसरे सहस्रों पाप मिल कर भी नहीं कर सकते। अर्थात् झूठ बोलना सब से बड़ा पाप है।

A lie.

No number of sins is equal to a lie.

चार दुःखदायक व्यक्ति।

सेवक शठ नृप कृपण कुनारी। कपटी मित्र शूल सम चारी॥

दुष्ट नौकर, सूम राजा, दुराचारिणी स्त्री और कपटी मित्र ये चार हृदय में काँटे की तरह चुभते रहते हैं।

Four bad persons.

A dishonest servant, a miserly king, a false wife and a treacherous friend, are four things as bad as a *shul* (thorm).

विनय न मानत जलधि जड़, भय विनु होय न प्रीति ॥ भय से प्रीति।

जो (सिन्धु) मूर्ख है वह विनती पर ध्यान नहीं देता (ऐसे लोगों के हृदय में) विना डर उपजाये स्नेह पैदा नहीं किया जा सकता।

Dullard ocean made no answer to prayer, such dullards don't do any kindness unless they are frightened. Fear and love.

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी ॥ ताड़ना के अधिकारी।

ढोल, गँवार, शूद्र, जानवर और स्त्री ये सब ताड़ना देने ही योग्य हैं।

Persons and thing require stern treatment.

A drum, a clown, a churl, a beast, and a bad woman are all fit subjects for beating.

सो कुल धन्य उमा सुनु, जगत पूज्य सुपुनीत। सकुल।
श्री रघुवीर परायण, जेहि कुल उपज विनीत ॥

हे उमा! वह वंश धन्य है, पवित्र और जगत्पूज्य है जिसमें भगवान् के भक्त का जन्म हो।

Blessed is the family yea, mark me, Uma, worthy of veneration throughout the world and truly holy, in which is born a humble worshipper of the divine Raghubir. A good family.

बररै बालक एक स्वभाऊ। इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ ॥ बालकों का स्वभाव।

बालकों का स्वभाव बर्रे के स्वभाव के समान होता है। अर्थात् जैसे छेड़ने ही से बर्रे डंक मारती है, उसी प्रकार

छेड़ने ही से लड़के खिजला जाते हैं। यह जान कर उनका स्वभाव ही ऐसा है, महात्मा जन उनकी खिजलाहट पर ध्यान नहीं देते।

The nature of children.

Boys are like wasps, no wise man will ever trouble himself about them.

हठी स्वभाव।

हठ न छुटै छूटै बरु देहा।
कनकौ पुनि पषाण ते होई। जारे सहज न परिहर सोई॥

जो लोग स्वभाव ही से हठी हैं, उनका हठ कैसे छूट सकता है—देह चाहे चली जाय पर हठ न जाने पावे। सोना पहाड़ों (खान) से निकलता है अतएव वह स्वभाव ही से हठी (कठोर) होता है—चाहे उसे जला ही क्यों न दिया जाय, किन्तु वह अपना स्वभाव (कठोरता) न छोड़ेगा। इसी प्रकार हठी स्वभाव भी है।

प्राण जायँ पर हठ नाहिं जाई।

The perverse nature.

I would sooner die than yield. Gold again, is another product of the rock that cannot be changed by any amount of burning.

हिंसक।

हिंसा पर अति प्रीति, तिनके पापहिं कवन मिति।

जिनको हिंसा करना पसंद है, उनके पापों की संख्या का ठिकाना नहीं है। अर्थात् हिंसा सब पापों की जड़ है।

The butchers and the murderers.

Those who kill, commit enormous amount of sin.

पर पीड़न।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

दूसरों को सताने के बराबर कोई नीचता नहीं है।

There is no meanness like malevolence. Malevolence.

रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु कर गनिय न ताहु।
अजहुँ देत दुख रवि शशिहिं, शिर अवशेषित राहु॥ शत्रु।

तेजस्वी शत्रु यदि अकेला भी हो, तौ भी उसे कम न समझे। यद्यपि राहु का केवल शिरमात्र ही रह गया है तथापि अब भी वह समय पा कर सूर्य और चन्द्रमा को ग्रस ही लेता है।

A powerful foe, even though surprised alone, is not to be lightly regarded, to this day Rahu, though he has nothing left but his head, is able to annoy both sun and moon. The enemy.

अरि वश दैव जियावत जाही। मरण नीक तेहि जीव न चाही॥ शत्रु के नीचे रहना।

ईश्वर किसी भी व्यक्ति को शत्रु के वश में रख कर न जिलावै। वह व्यक्ति ऐसे जीवन की अपेक्षा मृत्यु अधिक पसन्द करेगा।

Whomever God creates the dependent of an enemy, it is good for him to die rather than live. To live in the midst of the enemies.

नाथ वैर कीजे वाहीसों। बुधि बल जीति सकिय जाहीसों॥ शत्रुता के योग्य।

शत्रुता उसीसे करनी चाहिये, जिसको बुद्धि या बल द्वारा जीत सकै।

You should fight, my lord, with one whom you may be able to subdue either by wit or strength. Enmity.

क्षमा और भूल।

क्षमहु चूक अनजानत केरी।

यदि मनुष्य से अनजान में भूल हो गयी हो, तो उसको क्षमा कर देना चाहिये।

Unintentional.

The crimes or follies done unintentionally should be forgiven.

शरणागत का त्यागना।

शरणागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि।
ते नर पामर पापमय, तिनहिं विलोकत हानि॥

जो लोग यह देख कर कि अपने शरण में आये हुए को अपने पास रखने से हानि होती है, उसे छोड़ देते हैं, वे महापापी हैं उनके देखने ही से हानि है।

To abandon a suppliant.

The men who abandon a suppliant, from suspicion that he may be an enemy, are vile and criminal and misfortune will keep her eye upon them.

शासन और कृपा।

साँसति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ॥

बड़ों का हृदय बड़ा सरल होता है। पहिले तो वे (कर्तव्यानुसार) छोटों को डाँट डपट लेते हैं फिर पीछे से उन पर कृपा भी दिखा देते हैं।

Punishment from the great men.

The great men have ever an easy temper, they do not forget their kindness even when punishing a wrong doer.

क्षत्रियों का स्वभाव।

रघुवंशिन कर सहज स्वभाऊ। मन कुपन्थ पग धरैं न काऊ॥
जेहि सपनेहु परनारि न हेरी॥

क्षत्रिय स्वभाव ही से सरल और निष्कपट होते हैं।

न तो वे बुरे रास्ते में कभी पैर ही रखते हैं और न सपने में भी पराई स्त्री की ओर निगाह डालते हैं।

It has always been a mark of the race of Raghu (Kshattriyas) that they never set their heart on evil courses. The nature of the Kshattriyas.

जो हम निदरहिं विप्र कहि, सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जन सुभट जेहि, भयवश नावहिं माथ॥ क्षत्रियाभिमान।

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल होइ अधिक बलवाना॥
जो रण हमें प्रचारै कोऊ। लरै सुखेन काल किन होऊ॥

यदि क्षत्रिय ब्राह्मणों ही का तिरस्कार करें तो संसार में ऐसा कोई न रह जायगा जिससे डर कर वे दब जायँ। मनुष्य की तो बात ही क्या, यदि देवता, दानव, कोई बड़ा राजा या बड़ा योद्धा ही उन्हें लड़ाई के लिये ललकारे तो भी वे, यह न देख कर कि ये हमसे सबल या समबल हैं, लड़ने के लिये तैयार हो जाते हैं, वे एक बार तो काल से भी आनन्द के साथ लड़ेंगे।

Hear the truth, you say I set you at naught when I treat you with the respect due to a Brahman ; but is there any warrior whom I (a Kshattriya) would bow my head in fear ? The pride of the Kshattriyas.

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाइँ पर वचन न जाई॥ क्षत्रियों का प्रण।

क्षत्रियों में सनातन से यह रीति चली आई है कि वे जो प्रण करते हैं उसे पूरा कर के ही छोड़ते हैं, चाहे उसे पूरा करने में उनके प्राण ही क्यों न चले जायँ।

The promise of a Kshattriya.

It is an immemorial rule in the Raghu family to lose life rather than break a promise.

क्षत्रिय किन से दबते हैं।

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन पर न सुराई॥

हमारे वंश (क्षत्रियों) में यह रीति चली आई है कि देवता, ब्राह्मण, भगवद्भक्त और गऊ इन चारो में से किसी पर भी प्रभुता नहीं दिखलाते। क्षत्रियों का यह कर्तव्य है कि वे इन पर प्रहार वा इनका अपमान न करें।

The men whom the Kshattriyas fear.

In my family there is no waging battle against gods or Brahmans, or devotees, or cows.

क्षत्रिय और कादरता।

क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुलकलंक तेहि पामर जाना॥

जो मनुष्य क्षत्रिय हो कर लड़ाई से डरे उस पापी को अपने कुल का दूषण ही समझ लेना चाहिये॥

The Kshattriya and cowardice.

For one who is born of warrior caste (Kshattriya) and yet shirks the battle is a disgrace to his lineage and a contemptible wretch.

नीच।

काटे पर कदली फले, कोटि यतन कर सींच।
विनय न मान खगेश सुनु, डाटेहि पै नव नीच॥

जिस तरह (एक बार फल कर) केला फिर विना काटे हुए नहीं फलता, चाहे वह कितना ही क्यों न सींचा जाय, उसी प्रकार से हे खगेश! नीच से चाहे कितना ही विनय क्यों न करो, वह विना डाँट खाये नम्र नहीं हो सकता।

Mean fellows.

Though you may take infinite trouble in watering it, a plantain will not bear fruit, until it

has been well trimmed; similarly, mark me, Garur, a mean upstart heeds neither prayers nor compliments, but requires rougher treatment.

करहि स्वामि हित सेवक सोई। — नौकर।

सच्चा सेवक वही है जो स्वामी की सेवा (हित) करे।

A good servant acts for his master's interest, however much others may abuse him. — Servant.

उतर देत सुनि स्वामि रजाई। सो सेवक लखि लाज लजाई॥ — नीच नौकर।

जो सेवक स्वामी की आज्ञा के पालन करने में आनाकानी करता है, वह बड़ा निर्लज्ज है।

A servant who hears his master's orders and answers him is one that shame herself would be ashamed to look at. — A mean servant.

नवनि नीच की अति दुखदाई। जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई॥ — नीचों की नम्रता।
भयदायक खल की प्रियबानी। जिमि अकाल के कुसुम भवानी॥

नीच की नम्रता ही (नीचा होना ही) बड़ा दुःखदायी है, जैसे अंकुश, धनुष, सर्प और बिल्ली ये चारो झुक कर ही मारते हैं। दुष्ट का मीठा बोल, अऋतु के फूलों (अर्थात् प्रकृति के नियमों के भंग होने की तरह) की तरह भयङ्कर है।

When a mean creature bends, it is only to give more pain, like an elephant-goad, a bow, a snake, or a cat. The friendly speech of a churl is as portentous, Bhavani, as flowers that blossom out of season. — Courtesy of the mean persons.

पराधीनता।

पराधीन सपने सुख नाहीं ॥

जो लोग पराधीन रहते हैं उनको सपने में भी सुख की आशा न करनी चाहिये।

The state of subjection.

In a state of subjection nobody can even dream of happiness.

समय की अनवधानता और उचित उपयोग वर्षा और खेती।

तृषित वारि बिनु जो तनु त्यागा। मुए करै का सुधा तड़ागा ॥
का वर्षा जब कृषी सुखानी। समय चूकि पुनि का पछितानी ॥

यदि हमारी आवश्यकता के समय हमें हमारी आवश्यक वस्तु न मिली तो हमारे लियें उसका होना न होना बराबर है। जो व्यक्ति प्यास से तड़फ रहा है और मारे प्यास के मरा जा रहा है, यदि उसको जल न मिला और वह मर गया तो मृत्यु के अनन्तर यदि अमृत ही का तलाव उसके पास क्यों न हो, तो वह उसके काम का नहीं है। उसी प्रकार यदि खेती खड़ी सूख रही है और पानी नहीं बरसता, तो खेती सूखने के बाद बरसना व्यर्थ है।

To catch the time by the four lock.

If a man dies of thirst for want of water of what use to him is a lake of nector when he is once dead? If what good is the rain when the crop is dead? Or what avails regret when a chance has once been lost.

कन्या के समान स्त्रियाँ।

अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुनु शठ ये कन्या सम चारी ॥

छोटे भाई की स्त्री, बहिन, पुत्रवधू तथा कन्या ये चारो लड़की के समान हैं।

Hearken, wretch, a younger brother's wife, a sister, a daughter-in-law and an unwedded maid (or daughter Kanya) are all alike. Women who should be regarded as daughters.

धन्य सो देश जहँ सुरसरी।

वह देश धन्य है जहाँ गंगाजी हैं। गंगाजी का देश।

Blessed is the country, in which the river Ganges flows. The country watered by the Ganges.

सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं विषयरत मंद मंदतर॥ उसका
काँच किराच बदलि शठ लेहीं। करते डारि परसमणि देहीं॥ दुरुपयोग।

नर शरीर को पा कर भी जो मनुष्य भगवान् का भजन नहीं करते, और विषयवासनाओं में फँसे रहते हैं वे महादुर्बुद्धि हैं। वे मूर्ख ज्ञान और भक्तिरूपी मणि को फेंक कर विषयरूपी काँच लेते हैं।

Men who have attained to this form and yet do not worship Hari, show themselves, in their infatuation for the world, greater fools than any fool living; they are like fools who prefer bits of glass while they throw away the philosopher's stone which they had in their hands. The misuse of the human body.

मुए वधे कछु नहिं मनुसाई।

मरे को मारने में कुछ बहादुरी नहीं है। कमजोर का मारना।

There is no valour shown in slaying the slain. To kill a weak person.

कविता का गुण।

भणित विचित्र सुकविकृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ॥
विधुवदनी सब भाँति सँवारी। सोह न वसन विना वरनारी॥
सब गुण रहित कुकविकृत बानी। राम नाम यश अंकित जानी॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुणग्राही॥

रसभेद आदि अनेक प्रकार के गुण दोष लोग बतलाते हैं जैसे सर्वांग सुन्दर स्त्री विना वस्त्रों अच्छी नहीं लगती उसी प्रकार अच्छे कवि की कविता भी विना भगवान् की कीर्ति के अच्छी नहीं लगती। और यदि किसी साधारण कवि की बनाई हुई कविता हो, तो उसमें अलंकार, यमक, श्लेष आदि न भी हों, और सरस भी न हो, तौ भी यदि उसमें भगवान् की कीर्ति वर्णित हो, तो भौंरे के समान सज्जन जन(उसके स्वरूप पर ध्यान न दे कर) उसके गुण को ग्रहण करेंगे और बुद्धिमान् उसको सादर पढ़ेंगे।

The equalities of poetry.

The most elegant composition of the most talented poet has not real beauty if the name of Rama is not in it; in the same way as a lovely woman adorned with the richest jewels is vile if unclothed. But the most worthless production of the feeble versifyer, if adorned with the name of Rama, is heard and repeated with reverence by the wise, who extract what is good in it like bees gathering honey.

कविता की कसौटी।

जो प्रबन्ध नहिं बुध आदरहीं। सो श्रम वृथा बालकवि करहीं॥
सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बैर बिसराय रिपु, जो सुनि करहिं बखान॥

जिस कृति को बुद्धिमान् आदर की दृष्टि से नहीं देखते उन कृतियों के रचने में जो परिश्रम किया जाता है वह व्यर्थ जाता है। सरल कविता और बे धब्बे की कीर्ति का सज्जन आदर करते हैं; जिनकी सराहना स्वाभाविक बैरी भी सुन कर करे।

If the good and wise will not honour it, the silly poet has had all his labour in vain. A clear style and an exalted theme are both commendable, and when they are combined, and enemy even, forgetting his natural hostility, will repeat the strain.

The test of good poetry.

इति।

Finis.

